वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
जुलाई (01-15), 2024

हिन्दू विश्व

बढ़ती गर्मी से त्रस्त है भारत

पर्यावरण के प्रति हिन्दू चिंतन की अनदेखी से बढ़ी समस्याएँ

गोरक्ष प्रांत के बस्ती में बजरंग दल शौर्य प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

बक्सर में विहिप दक्षिण बिहार प्रान्त के 10 दिवसीय परिषद शिक्षा वर्ग में उपस्थित प्रांत के पदाधिकारी

रायबरेली में अवध व कानपुर प्रांत के परिषद शिक्षा वर्ग में उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

काशी प्रांत के बजरंग दल शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

गंजबासौदा में गौतस्करी रोकने और मनरेगा की 2200 बंद पड़ी गौशालाओं को शीघ्र चालू करने हेतु विहिप-गौरक्षा विभाग ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

01–15 जुलाई, 2024

आषाढ़ कृष्ण – शुक्ल पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. – 2081, युगाब्द– 5126

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. – 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. – 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495
hinduvishwa@gmail.com

– : मूल्य :–

विदेशों के लिए $75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित

एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
@eHinduVishwa

कुल पेज – 28

हे अश्विनीकुमारो! श्रेष्ठकर्म के लिए आप हमारी बुद्धि का रक्षण करें। हमारी सन्तानोत्पादन की शक्ति समाप्त न हो। आपकी कृपा से संतानों को यथेच्छ धन देकर, रत्नों (सद्गुणों) से अलंकृत होकर हम दिव्य पवित्रता प्राप्ति हेतु यज्ञों जीवन जीएँ।

– ऋग्वेद

नेपाल मुस्लिम आतंकवाद की जद में	08
प्रकृति में जहर घोलने से बढ़ी गर्मी	10
सामूहिक जन भागीदारी से पर्यावरण संरक्षण	12
ऐतिहासिक चूनाव और परिणाम भी रहे ऐतिहासिक	14
क्या भारत कभी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन पाएगा	16
अस्तित्व ही परमात्मा है	18
ढाक के पत्ते : पारंपरिक विश्वासों और आधुनिक विज्ञान का समन्वय	20
खीरे के औषधीय गुण	22
गौ तस्करी में जप्त वाहन राजसात करने पर प्रशासन का सम्मान	23
दक्षिण बिहार प्रांत का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग तथा परिषद शिक्षा वर्ग	24
गौरक्षा विभाग ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा	25
हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ सामुदायिक भागीदारी को अपनाने के लिए तैयार है	26

सुभाषित

धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात् प्रभवते सुखम्।
धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत।।

धर्म से अर्थ प्राप्त होता है, धर्म से सुख का उदय होता है, धर्म से ही मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर लेता है, इस संसार में धर्म ही सार है। अतः शास्त्रोचित धर्म का पालन अवश्य करें।

सम्पादकीय

नेपाल में पनप रहा है जिहादी आतंकवाद

विजय शंकर तिवारी

महाराजगंज से सटे नेपाल के हथियागढ़ गाँव, जहाँ धान की खेत के बीचोंबीच बना है, एक विशाल मदरसा, जो पहले से ही भारतीय खुफिया एजेंसियों की रडार पर भी है। नेपाल के सीमावर्ती जिलों रौतहट, पर्सा, कपिलवस्तु, सुनसरी और बारा में विदेशी पैसे से ऐसे मदरसे हर दूसरे दिन खड़े हो रहे हैं। जो भारत विरोधी गतिविधियों के केन्द्र बने हुए हैं। भारत–नेपाल के बॉर्डर एरिया में बन रहे इन मदरसों के पीछे आईएसआई का दिमाग है, जबकि पैसा चीन लगा रहा है। इनका एकमात्र उद्देश्य भारत को बर्बाद करना है, आतंकी नेटवर्क को बढ़ावा देना है। सीमावर्ती क्षेत्रों में बहुत तेजी से मदरसे बनाये जा रहे हैं। मात्र पाँच प्रतिशत मुस्लिम जनसँख्या वाले नेपाल में हजारों की सँख्या में मदरसे चलाए जा रहे हैं। इस्लामिक मौलाना इन मदरसों की सँख्या तेजी से बढ़ाने में लगे हुए हैं। जैसे–जैसे मदरसे बढ़ रहे हैं, वैसे–वैसे नेपाल में जिहादी घटनाएँ भी बढ़ रही हैं। नेपाल में इस्लाम तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। 2021, नेपाल की जनगणना के अनुसार, लगभग 1.483 मिलियन मुसलमान हैं, जो कुल जनसँख्या का 5. 09 प्रतिशत है। यहाँ कुल 14,83,060 मुसलमान हैं।

ऑपइंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में नेपाल की सीमा पर मस्जिदों और मदरसों की सँख्या में भारी वृद्धि हुई है। लेकिन, यह केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं तो उत्तराखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल की सीमा पर भी मस्जिदों और मदरसों का ऐसा नेटवर्क सक्रिय है, जो नेपाल को अस्थिर करने के लिए इस्लामीक उग्रवाद को बढ़ावा दे रहा है। उत्तर प्रदेश में सशस्त्र सीमा बल ने नेपाल से लगी सीमा के 15 किलोमीटर के भीतर स्थित मस्जिदों और मदरसों की सँख्या में अचानक वृद्धि की सूचना दी है। उत्तर प्रदेश राज्य नेपाल के साथ 570 किलोमीटर की सीमा सांझा करता है और यहाँ पिछले दो वर्षों में मस्जिदों की सँख्या में भारी वृद्धि दर्ज की गई है।

नेपाल की सीमा पर उत्तर प्रदेश में बनी 257 नई मस्जिदें आतंकी फंडिंग गतिविधियों में शामिल हैं। सूचना तो यह भी है कि इन मस्जिदों और मदरसों के लिए पाकिस्तान और दावत–ए–इस्लामिया जैसे इस्लामी कट्टरपंथी समूहों से धन भेजा जा रहा है। आवाज़ द वॉयस की एक रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और यहाँ तक कि पश्चिम बंगाल में भारत–नेपाल सीमा पर स्थित मस्जिदों और मदरसों को वित्त पोषित करने में लगी हुई है।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है, "मस्जिदों, मदरसों और मस्जिद–सह–मदरसों के निर्माण में सबसे अधिक वृद्धि उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जिलों महाराजगंज, सिद्धार्थ नगर, बलरामपुर, बहराइच, श्रावस्ती, पीलीभीत और खीरी में देखी गई है, जबकि बिहार के किशनगंज और अररिया और पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के पानीटंकी शहर में पिछले तीन वर्षों में इस तरह की वृद्धि देखी गई है," केंद्रीय सुरक्षा ग्रिड के एक अधिकारी ने कहा। हाल के वर्षों में, हिमालयी राज्य का उपयोग पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूहों द्वारा एक सुरक्षित आश्रय के रूप में किया गया है और भारतीय एजेंसियों के पास इस बात के पर्याप्त सबूत है कि कैसे नेपाली बैंक भी भारत के खिलाफ आतंकी फंडिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। 2019 में, उत्तर प्रदेश पुलिस ने नेपाल के केंद्रीय बैंक से जुड़े एक अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के वित्तपोषण रैकेट का भंडाफोड़ किया था और उन्होंने भारतीय नागरिकों की संलिप्तता का दावा किया था, जो नेपाल से पैसा लाते थे और इसका इस्तेमाल देश में आतंकवादी गतिविधियों को वित्तपोषित करने के लिए करते थे।

यह सच है कि नेपाल अब जिहादी और भारत विरोधी गतिविधियों का बड़ा केन्द्र बनता जा रहा है। सुरक्षा एजेंसियों को इन विषयों का सब कुछ पता है। बस आवश्यकता है, नेपाल को इन तत्वों से मुक्त कराने का। इसके लिए दोनों देशों में मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है।

नेपाल की सीमा पर उत्तर प्रदेश में बनी 257 नई मस्जिदें आतंकी फंडिंग गतिविधियों में शामिल हैं। सूचना तो यह भी है कि इन मस्जिदों और मदरसों के लिए पाकिस्तान और दावत–ए–इस्लामिया जैसे इस्लामी कट्टरपंथी समूहों से धन भेजा जा रहा है। आवाज़ द वॉयस की एक रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और यहाँ तक कि पश्चिम बंगाल में भारत– नेपाल सीमा पर स्थित मस्जिदों और मदरसों को वित्त पोषित करने में लगी हुई है।

मुरारी शरण शुक्ल

(सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

बढ़ती गर्मी से त्रस्त है भारत सम्पूर्ण जगत है खतरे में

पूरा देश इसबार भयंकर गर्मी से त्रस्त हो रहा है। उत्तर भारत के अनेक राज्यों में सैकड़ों की सँख्या में लोगों की अधिक गर्मी के कारण मृत्यु हुई है, लगभग 40 हजार लोग बिमार हुए हैं। स्कूल जाने वाले बच्चे भी गर्मी से प्रभावित हुए। लगातार डेढ़ माह तक अनेक राज्यों में सरकारी आज्ञा से विद्यालयों को बंद करवाना पड़ा। केन्द्र सरकार ने आज्ञा जारी किया कि दोपहर के कुछ घंटों तक मजदूरों से काम न करवाया जाए। जिनको विवशता में दोपहर में आना– जाना पड़ता है, ऐसे लोग बहुत प्रभावित हुए। कहा जा रहा है कि इसबार गर्मी ने विगत दो हजार वर्षों का रिकार्ड तोड़ दिया है।

रिकार्ड गर्मी

1850 ई. में रिकार्ड शुरु होने के बाद से यह वर्ष सबसे अधिक गर्म रहा। स्टडी जर्नल नेचर कम्यूकेशन में छपी इस रिपोर्ट में ग्लोबल वार्मिंग को इस रिकार्ड गर्मी का कारण बताया गया है। वैज्ञानिकों ने प्रथम शदी से 1850 ई. तक की गर्मी का पता लगाने के लिए उत्तरी गोलार्द्ध से ट्री–रिंग डेटा का उपयोग किया था। अध्ययनकर्ताओं ने बताया कि विगत 28 वर्षों में 25 वर्ष की गर्मियों ने AD246 के स्तर को भी पार कर दिया। AD 246 1850 से पहले का सबसे गर्म वर्ष रिकार्ड किया गया था।

बढ़ती गर्मी

वैज्ञानिकों ने इस गर्मी का कारण ग्लोबल वार्मिंग को बताया है। उनका कहना है कि मनुष्यों द्वारा वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से गर्मी इसी प्रकार बढ़ती रहेगी। बढ़ते तापमान पर अंकुश लगाने का एकमात्र तरीका है उत्सर्जन पर नियंत्रण। उत्सर्जन में कटौती में जितना विलम्ब होगा, इस बढ़ती गर्मी को रोकना उतना ही कठिन होता जाएगा और महंगा होता जाएगा।

हीटवेब (लू)

गर्मी बढ़ने से हवाएँ गर्म हो जा रही हैं। जब गर्म हवा तेजी से बहने लगती है, तो इसे लू कहते हैं, अँग्रेजी में इसी गर्म हवा को हीट वेब कहते हैं। हवा इतनी गर्म हो जाती है कि मानव शरीर को इस हवा का स्पर्श होने पर लगता है कि त्वचा जलने लग गई है। इससे लोगों को अचानक हीट स्ट्रोक लगने का डर होता है, जो जानलेवा भी हो सकता है। मौसम विभाग ने बताया है कि इसबार ओडिशा सर्वाधिक 27 दिनों तक लू की चपेट में रहा। पश्चिमी राजस्थान में 23 दिनों तक, गंगीय पश्चिम बंगाल 21 दिन, दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़ और पश्चिमी उत्तरप्रदेश में प्रत्येक 20 दिन भीषण गर्मी की चपेट में रहे। सामान्य वर्षों में पड़ने वाली गर्मी से दिनों की सँख्या इसबार दोगुनी थी। ठंढे प्रदेशों में भी गर्मी का कहर देखा गया। हिमाचल प्रदेश में हीट वेब 12 दिन, सिक्किम में 11 दिन, जम्मू – कश्मीर में 6 दिन और उत्तराखंड में 2 दिन चला।

आग लगने का संकट

बढ़ती गर्मी के साथ अनेक संस्थानों, प्रतिष्ठानों, भवनों में आग लगने के समाचार भी आ रहे हैं। अनेक लोगों ने इस गर्मी में रेत पर पापड़ भुनते हुए और

आमलेट बनाते हुए विडियो सांझा किया है। गर्मी के महीने में अधिकांश घरों में बड़ी सँख्या में एसी, पंखे, कूलर समेत तरह–तरह के बिजली से चलने वाले उपकरण प्रयोग किए जाते हैं। गर्मी के मौसम में आग लगने की घटना में बड़ा हाथ शॉर्ट सर्किट का होता है। गर्मी में तापमान काफी ज्यादा होता है। इस कारण इलेक्ट्रिक उपकरण भी काफी गर्म हो जाते हैं। इस कारण इन उपकरणों में शॉर्ट सर्किट की आशंका भी काफी बढ़ जाती है। गर्मी के महीने में भारी सँख्या में इलेक्ट्रिक उपकरणों के उपयोग के कारण ओवरलोडिंग हो जाती है, जो कि बड़ी आग का कारण बनती है। ओवरलोडिंग के कारण बिजली की वायरिंग भी जल जाती है। इसके अलावा ट्रांसफर्मर जल जाते हैं और गर्मी के कारण तार भी टूटने का खतरा रहता है। ऐसे में कोई एक चिंगारी भी बड़ी आग का कारण बनकर सामने आती है। भीषण गर्मी से विगत छः महीनों के दौरान सात राज्यों में आग लगने की 38 हजार घटनाएँ दर्ज की गई हैं।

जंगलों में आग

गर्मी के महीने में शुष्क मौसम के कारण जंगलों में भी काफी आग लगने की घटनाएँ देखने को मिल रही हैं। वस्तुतः, जंगल में कई ऐसे पेड़ होते हैं, जिनके आपस में टकराने से चिंगारी निकलती है और आग लग जाती है। यद्यपि, ध्यान देने वाली बात यह भी है कि जंगल में लगी ज्यादातर आग मानव निर्मित होती है। नई घास उगाने के लिए कई बार किसान पुरानी घास में आग लगा देते हैं। कई बार कहीं पर लकड़ी जलाकर छोड़ देने से भी जंगलों में आग फैलती है।

ठंढे देशों में भी गर्मी देखी गई

दुनियाँ के सबसे ठंढे क्षेत्र रसिया के साइबेरिया में इसबार तापमान 40 डिग्री हो गया। चीन में 45 डिग्री, उज्बेकिस्तान में 43 डिग्री और कजाकिस्तान में 41 डिग्री तापमान रिकॉर्ड किया गया। यूरोप के इतिहास में अब तक सामने आए सबसे भयंकर 30 हीट वेव्स में से 23 तो केवल इसी शताब्दी में सामने आए। इसके कारण पिछले 20 वर्षों में गर्मी के

कारण होने वाली मौतों की सँख्या में 30 प्रतिशत की बढोत्तरी हुई है। ग्रेट ब्रिटेन में इसबार तापमान 26 डिग्री को पार कर गया। कार्बन डाईऑक्साइड के कारण उत्पन्न होने वाली 90 प्रतिशत अतिरिक्त हीट को सोखने वाले सागर की गर्मी भी एक नई ऊँचाई तक पहुंच गई थी। रिकॉर्ड के अनुसार, यूरोप में समुद्र का औसत तापमान एक नई ऊँचाई पर पहुँच गया था। इस गर्मी के कारण पूरे यूरोप में ग्लेशियर पिघलने लगे थे, जबकि ग्रीस के जंगलों में यूरोपियन यूनियन के इतिहास में सबसे बड़ी आग देखने को मिली थी।

युद्धों का भी प्रभाव है गर्मी पर?

रुस–यूक्रेन युद्ध और इजरायल फिलिस्तीन युद्ध के कारण भी गर्मी में रिकार्ड वृद्धि देखी गई है। इन युद्धों में लाखों टन गोला–बारुद प्रतिदिन खप रहे हैं। रुस–यूक्रेन दोनों ठंढे देश हैं, जिससे उनपर असर कम होगा और भारत, पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका और बाँग्लादेश जैसे देशों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ रहा है। अरब के देशों पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है, हज करने के लिए मक्का गए 1500 लोगों की मृत्यु हो गई, जिसमें 68 भारतीय थे।

कम्प्लीट कंक्रीट होने से भी बढ़ी गर्मी

आजकल शहरों में कहीं भी खुली मिट्टी नहीं मिलती, पार्कों को छोड़कर। कंक्रीट के घर, दुकान, सँस्थान तो हैं ही, सभी सड़कें और गलियाँ भी पक्की हैं। नालियाँ भी कंक्रीट की होती है। चारों तरफ कंक्रीट होने से भी गर्मी बेतहाशा बढ़ने लगी है। इसके कारण बड़े शहरों में रात और दिन के तापमान में अंतर बहुत कम देखा जाता है। लगातार अधिक गर्मी होने से गर्मी का प्रभाव अधिक होता है।

मॉनसून की अनियमितता

पानी वायुमंडल में, ज़मीन पर, समुद्र में और भूमिगत है। यह जल चक्र के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है, जो जलवायु परिवर्तन के साथ बदल रहा है। ग्रीन हाउस गैसों के अधिक उत्सर्जन से वायुमंडल का तापमान बढ़ रहा है, जिससे वायु के संचालन मार्ग में बाधा उत्पन्न हो रही है। समुद्र में प्रदूषण बढ़ने से बादल बनने की प्रक्रिया में विघ्न उत्पन्न हो रहा है। इससे मॉनसून का नियमित चक्र अनेक वर्षों से अनियमित हो गया है। प्रायः मॉनसून विलम्ब होने से किसानों की फसल विलम्ब हो जाती है और उत्पादन प्रभावित होता है।

कम होती बरसात

विगत दशकों से यह देखा जा रहा है कि वर्षा जल लगभग सभी राज्यों में घटता जा रहा है। कभी–कभी कुछ गिनती के दिनों में ही उतनी बरसात हो जा रही है, जितनी पुरे वर्षा ऋतु में होती है। पहाड़ों में बादल फटने की घटनाएँ बढ़ती जा रही है। कम वर्षा होने से अलग–अलग क्षेत्रों में अकाल होने की स्थिति बढ़ती जा रही है। अधिक वर्षा से बाढ़ आने का प्रमाण बढ़ रहा है और उससे फसलें

बर्बाद हो जाती हैं। अनियमित बरसात और कम होती वर्षा से जन–जीवन प्रभावित हो रहा है।

भूमिगत जल का नीचे खिसकना

विगत दशकों में पुरे देश में भूमिगत जल नीचे खिसकते जा रहे हैं। मैंने मेरे गाँव में ऐसा भी देखा है, जब कच्चे कुएँ को भरकर बरसात में उसपर धान रोप दिया जाता था और धान कटते ही कुआँ खोदकर, उसके पानी से गेहूँ, दलहन और सब्जी की खेती की जाती थी। कुआँ भी बहुत गहरा नहीं, तो सात से दस फिट गहरा ही हुआ करता था, उसमें भी पानी सुखता नहीं था। लेकिन उन्हीं स्थानों पर अब डेढ़ सौ, दो सौ फीट बोर किए बिना पानी नहीं मिलता। आखिर पानी के इतना नीचे खिसकने का कारण क्या है? इसका प्रमुख कारण है अंधाधुंध बोरिंग करके वाटर टेबल को डिस्टर्ब कर दिया गया। रासायनिक खादों के अंधाधुंध उपयोग से मिट्टी की नैसर्गिक संरचना बिगड़ गई। जल धारण स्रोतों को तेजी से नष्ट किया गया। नदियों के जल ग्रहण क्षेत्रों में अतिक्रमण किया गया और वन नष्ट किए गए। विदेशी पेड़, जो जल अधिक सोखते हैं, का अंधाधुंध रोपण किया गया। इससे पृथ्वी पर जल संकट उत्पन्न होने लग गया, इसके कारण भी गर्मी हावी होता जा रहा है।

वर्षा जल संरक्षण को नकारना

अनेक वर्षों से तालाब भरकर घर बना लेने का चलन बढ़ा है। नदियों के जल संग्रहण क्षेत्रों का अतिक्रमण किया गया। झील–झरनों को भी मानवीय गतिविधियों से नष्ट किया गया। इन जल संग्रहण के स्रोतों में वर्षा का जल संग्रह होता था, इसका धरती पर व्यापक प्रसार होता था, यह बाधित होने से भूमिगत जल कम होने लगा, वृक्ष घटने लगे, हरियाली घटने लगी और गर्मी बढ़ने लग गया। गाँवों में बरसात के जल को रोकने के लिए आहर बनाये जाते थे, छोटे बांध बनाये जाते थे, इससे वर्षा जल का संग्रह होता था और भूमिगत जल का वर्द्धन होता था। अब इन आहरों की देखभाल कम होने लगी, गाँव से शहरों की ओर लोगों का पलायन होने से खेती भी बंद होने लगी, फलतः ये जलस्रोत भी अनदेखी का शिकार हो गए। नये समय में पार्कों में गढ्ढे खोदकर वर्षा जल संग्रह करने की बात हुई, इसपर न्यायालयों ने भी निर्देश दिए, लेकिन परिणाम कुछ खास नहीं मिला, क्योंकि सरकारें इन विषयों पर गम्भीर नहीं रहीं। बड़े बिल्डिंग, अपार्टमेंट्स में भी वर्षा जल संग्रह करके भूमि में छोड़ने की बात की गई, लेकिन इसपर भी कुछ खास काम नहीं हुआ। सड़क किनारे भी इसी प्रकार जल की संग्रह की बात की गई, लेकिन परिणाम नगण्य ही रहा।

कटते पेड़, कम होता वनाच्छादन

आजादी के पहले अँग्रेज कीमती लकड़ियाँ ढोकर ब्रिटेन ले जाते थे। आजादी के बाद भी पेड़ों की कटाई अंधाधुंध चलती रही, बल्कि टेंडर करवा के थोक में जंगल कटवाये गए और यह कटाई 90 के दशक तक भी चलता रहा। आज भी बहुत स्थानों पर वनों की कटाई अनवरत चल रही है। अब तो कीमती लकड़ियाँ अनुपलब्ध हो गई हैं। पेड़ कम होने से भूमिगत जल नीचे जाने लगा, वर्षा घटने लग गई। पेड़ अधिक होने से वाष्पीकरण पर्याप्त होता था और इससे भी बादल बन जाते थे और बरसात होती थी। अब यह सम्भावना समाप्त हो गई।

देशी पेड़ों की उपेक्षा और विदेशी पेड़ों का अंधाधुंध रोपण

कहा जाता है कि जहाँ साल का सघन वन हो, वहाँ झरना अपने आप फूट पड़ता है। आम के बाग में आम के पत्तों से जल की बूंदें टपकने का वर्णन तो अनेक लोग करते हैं। देशी पेड़ों के सघन रोपण से वहाँ का भूमिगत जल उपर आ जाता है और बरसात भी बढ़ जाता है। पीपल, बरगद, गुलर, पांकड़, महुआ, साखु, सागवान, शीसम, अर्जुन इत्यादि भारत के देशी पेड़ हैं। अलग–अलग क्षेत्रों के अनुरूप वानस्पतिक विवधता भरपूर है। उस अनुरूप पेड़ों की सूचि बनवाकर उनकी सघन रोपाई की जानी चाहिए और विदेशी पेड़ों का उन्मूलन किया जाना चाहिए। विदेशी पेड़ों से भूमिगत जल तेजी से कम होता है और बरसात भी प्रभावित होती है।

लू पीड़ित की सहायता

अगर आपको लगता है कि कोई लू से पीड़ित है, तो तुरंत इस तरह उसकी सहायता कीजिए :

- ❖ पीड़ित को छाया में या किसी ठंडी जगह पर ले जाएं। कपड़े ढीले कर दें।
- ❖ पीड़ित को पंखा झलें। अगर होश में हो, तो उसे पानी दें।
- ❖ पीड़ित के चेहरे और शरीर को ठंडे, गीले कपड़े से पोंछते रहें।
- ❖ अगर लक्षण ठीक न लगे, या व्यक्ति बेहोश हो, तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।

गर्मी से बचने के उपाय

- ❖ जल अधिक पियें।
- ❖ सुबह जल्दी स्नान करें।
- ❖ खीरा, कंकड़ी, खरबूजा इत्यादि खुब खायें।
- ❖ नींबू, संतरा, किन्नू इत्यादि का सेवन करें।
- ❖ आवश्यक होने पर ही गर्मी में बाहर जायें। यदि बाहर जाना ही पड़े, तो सिर तौलिए से ढंककर जायें।
- ❖ धुप में चलते समय पानी पीना हो तो, कहीं छाया में 20–25 मिनट रूककर ही जल पीएँ। धुप से घर आ जाने पर आधा घंटा रूककर ही पानी पीयें।
- ❖ गिलोय, पुनर्नवा, नारियल, बेल और फलों का जूस पियें।

नेपाल मुस्लिम आतंकवाद की जद में

नेपाल के जनकपुर में मुस्लिम समुदाय द्वारा सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करने की साजिश के बाद दो समुदायों के बीच सांप्रदायिक तनाव फैल गया है। मुस्लिम पक्ष द्वारा पुलिस की मौजूदगी में पत्थरबाजी की गई, जिसमें हिन्दू पक्ष के कई लोग घायल हो गए। घायलों में स्कूल में पढ़ने वाले छोटे–छोटे बच्चे भी शामिल हैं। मुस्लिम पक्ष के दबाव में एक योग शिविर का भी काम रोक दिया गया है। हालात को देखते हुए इलाके में फोर्स तैनात कर दी गई है। घटना सोमवार (10 जून 2024) की है। ऑफ इंडिया से बात करते हुए हिन्दू संगठन के सदस्यों ने इसे लैंड जिहाद बताया और वामपंथी पार्टियों द्वारा मुस्लिम पक्ष को समर्थन देने का आरोप भी लगाया है।

माँगी थी नमाज पढ़ने के लिए थोड़ी सी जगह

ऑफ इंडिया को मिली जानकारी के मुताबिक शिवपुर में एक सरकारी स्कूल है। भवन के आसपास काफी जमीन है, जो कि स्कूल की ही है। इस जमीन पर लगभग 16 साल पहले मुस्लिम समुदाय के कुछ लोगों ने नमाज पढ़नी शुरू कर दी थी। तब इस इलाके में मुस्लिम आबादी न के बराबर थी। 2–4 परिवार ही इस इलाके में हुआ करते थे। उन्होंने इबादत के लिए पहले स्कूल की बिल्डिंग चुनी। लगभग 10 साल पहले स्कूल कम्पाउंड में किसी बात को लेकर हिन्दू और मुस्लिम पक्ष में विवाद हो गया था। तब से कुछ समय के लिए स्कूल के अंदर नमाज पढ़नी बंद हो गई थी। इस बीच जनकपुर में मुस्लिमों की तादाद लगातार बढ़ती रही। 10 साल पहले का विवाद शांत होने के बाद मुस्लिम पक्ष ने स्कूल के भवन के बजाय, उसकी खाली पड़ी जमीन पर नमाज पढ़नी शुरू कर दी। इसमें नमाजियों की तादाद बढ़ती चली गई। अब जनकपुर के शिवपुर इलाके में लगभग 70 से 80 घर मुस्लिमों के हो चुके हैं। इन्होंने अपनी खुद की मस्जिद भी बनवा डाली है। इसके बावजूद मुस्लिम पक्ष ने स्कूल की सरकारी जमीन पर नमाज पढ़ना बंद नहीं किया। कुछ साल पहले से मुस्लिमों ने इस सरकारी जगह को अपनी इबादतगाह वाली जगह बताना शुरू कर दिया है।

साल 2013 में स्कूल की जमीन को अपना बताते हुए मुस्लिम पक्ष के लोग जनकपुर हाईकोर्ट गए थे। यहाँ चली सुनवाई में हाईकोर्ट ने जमीन पर मुस्लिम पक्ष का दावा खारिज कर दिया। न्यायाधीश ने यह जमीन सरकार की बताई और वहाँ किसी भी प्रकार के निजी निर्माण पर रोक लगा दी। ऑफ इंडिया के पास हाई कोर्ट के आदेश की कॉपी मौजूद है। जमीन सरकार की घोषित होने के बावजूद मुस्लिम पक्ष ने वहाँ नमाज पढ़नी बंद नहीं की। नमाजियों की पूरी टोली को मोहम्मद कैश और इब्राहिम राईन लीड करते रहे। रमजान आदि के महीनों में तो यहाँ इतनी भीड़ हो जाती थी कि बच्चों की पढ़ाई में बाधा आने लगी थी।

स्कूल के नाम पर है जमीन

साल 2013 में स्कूल की जमीन को अपना बताते हुए मुस्लिम पक्ष के लोग जनकपुर हाईकोर्ट गए थे। यहाँ चली सुनवाई में हाईकोर्ट ने जमीन पर मुस्लिम पक्ष का दावा खारिज कर दिया। न्यायाधीश ने यह जमीन सरकार की बताई और वहाँ किसी भी प्रकार के निजी निर्माण पर रोक लगा दी। ऑफ इंडिया के पास हाई कोर्ट के आदेश की कॉपी मौजूद है। जमीन सरकार की घोषित होने के बावजूद मुस्लिम पक्ष ने वहाँ नमाज पढ़नी बंद नहीं की। नमाजियों की पूरी टोली को मोहम्मद कैश और इब्राहिम राईन लीड करते रहे। रमजान आदि के महीनों में तो यहाँ इतनी भीड़ हो जाती थी कि बच्चों की पढ़ाई में बाधा आने लगी थी।

जो दिखा उसी पर बोला हमला

इस बीच सोमवार (10 जून 2024) को स्कूल वाली खाली जगह पर मुस्लिम समुदाय के लोगों की भीड़ जमा हो गई। भीड़ में 70 से 80 लोग शामिल बताए जा

रहे हैं। इनमें बच्चे, बूढ़े और जवान के अलावा औरतें भी शामिल थीं। स्थानीय लोगों ने बताया कि वहाँ 2–3 दिन से चुपके–चुपके ट्रैक्टर–ट्रॉली से ईंटें और सीमेंट आदि गिरवा दिए गए थे और कारीगर बुलाकर सरकारी जमीन पर दीवार उठाई जा रही थी।

निर्माण अवैध बता कर स्कूल द्वारा रोकने की गुहार

स्कूल की जमीन पर मुस्लिम पक्ष द्वारा दीवार बनाते देखकर, वहाँ के टीचर, छात्र–छात्राओं और आसपास के ग्रामीणों ने इसे अवैध निर्माण बताकर विरोध शुरू कर दिया। मामले की जानकारी मिलते ही मौके पर पुलिस के 2 जवान भी पहुँच गए। इस रुकावट की वजह से मुस्लिम पक्ष नाराज हो गया। उन्होंने स्कूल के पास जुटे ग्रामीणों और छात्रों पर हमला कर दिया। हमले के दौरान लाठी–डंडे भांजे गए। हिन्दुओं के अलावा पुलिस पर भी पत्थरबाजी की गई। इस हमले में आधे दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। घायलों में स्कूल के अंदर पढ़ रहे कुछ नाबालिग छात्र भी बताए जा रहे हैं। घटना की सूचना मिलते ही घटनास्थल पर अतिरिक्त पुलिस बल पहुँचा। आरोप है कि पुलिस ने पत्थरबाजी कर रहे मुस्लिमों पर कोई कार्रवाई नहीं की और उनको समझाती–बुझती रही।

स्कूल की जमीन पर खड़ा हुआ अवैध निर्माण, रुकवा दिया योग शिविर का भी निर्माण

घायल हिन्दुओं का अस्पताल में इलाज करवाया गया है। अभी तक किसी भी पत्थरबाज अथवा हमलावर की गिरफ्तारी नहीं हुई है। ऑफ इंडिया ने इस मामले में हिन्दू सम्राट सेना के कुछ पदाधिकारियों से बात की। नाम नहीं छापने की शर्त पर उन्होंने बताया कि मुस्लिम पक्ष के लोगों को वामपंथी पार्टी (एमाले) का समर्थन हासिल है। उन्होंने बताया कि मुस्लिम पक्ष से जब काम रोकने के लिए कहा गया, तो उन्होंने स्कूल से थोड़ी दूर पर बन रहे योग शिविर पर आपत्ति दर्ज करवा दी। यह योग शिविर डॉक्टर प्रमोद यादव अपनी निजी जमीन पर बनवा रहे थे। प्रमोद ने अपनी तरफ से तमाम सफाई और जमीन निजी होने के कागजात भी दिखाए। इसके बावजूद प्रशासन ने प्रमोद के योग शिविर पर अस्थाई तौर पर पाबंदी लगा दी है। हिन्दू सम्राट सेना के पदाधिकारियों ने चेतावनी दी है कि मुस्लिमों को खुश करने के लिए रोके गए योग शिविर का काम फिर से शुरू नहीं हुआ, तो वो आंदोलन करेंगे। फिलहाल प्रशासन ने योग शिविर के कागजात मँगवाए हैं। मुस्लिम पक्ष द्वारा जो छोटी सी दीवार स्कूल की जमीन पर खड़ी की गई है, वो अभी भी बरकरार है। हिन्दू संगठनों ने इस निर्माण को अवैध बताते हुए, तत्काल ध्वस्त करने की माँग की है।

murari.shukla@gmail.com

कश्मीर में तीर्थयात्रियों पर हमले के विरोध में पुतला दहन और ज्ञापन

अशोकनगर। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल द्वारा गाँधी पार्क पर पुतला दहन कर विरोध प्रदर्शन किया गया, राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया गया। विगत दिवस कश्मीर में तीर्थ यात्रियों की बस पर हुए हमले के विरोध में प्रदर्शन किया गया।

प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉक्टर दीपक मिश्रा ने कहा कि जिस प्रकार से आतंकवादियों ने पाकिस्तान की पोशाक पहनकर कश्मीर में जो घटनाएँ की हैं, चलती हुई बस पर फायरिंग करते हुए 10 यात्रियों का बलिदान हो गया है, घटना की विश्व हिंदू परिषद–बजरंग दल निंदा करती है और महामाहिम के माध्यम से आवाहन करती है कि ऐसे आतंकवादियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई करें, जो आतंक, आशांति फैलाना चाहते हैं। कश्मीर में तीर्थ यात्रियों पर हमला करना कायरता है, इससे पूरे हिंदू समाज में रोष है, आतंकवादियों को जड़ से नष्ट करने के लिए कठोर से कठोर कदम उठाए जाने चाहिए। बजरंग दल प्रांत संयोजक अवधेश तिवारी ने ज्ञापन का वाचन किया और कहा कि आतंकी घटनाओं का बजरंग दल विरोध करेगा। विभाग संयोजक वेद राम लोधी द्वारा कहा गया कि आतंकवादियों को छोड़ेंगे नहीं, बजरंगी देश की रक्षा के लिए तैयार हैं। आतंकी घटनाओं से लड़ने के लिए शासन कठोर कदम उठाए।

प्रकृति में जहर घोलने से बढ़ी गर्मी

ललित गर्ग

लोकसभा चुनाव के प्रचार की गर्मी भले ही समाप्त हो गयी हो, लेकिन प्रकृति से जुड़ी गर्मी सौ–डेढ़ सौ वर्षों का रिकार्ड तोड़ते हुए कहर बरपा रही है। दिल्ली का पारा 50 डिग्री से तो ज्यादा ही रहा है। देश के 17 से अधिक शहरों में तापमान उच्चतम स्तर पर चल रहा है। यह एक तरह का प्राकृतिक आपातकाल है। हीटवेव या यों कहें कि लू के थपेड़ों ने जनजीवन को मौत के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। लू, हीटवेव या तापघात के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में मौत के समाचार भी आ रहे हैं। तस्वीर का एक पहलू यह है कि अभी तक सही मायने में हमारे देश में हीटवेव को डिजास्टर मैंनेजमेंट में पूरी तरह से शामिल नहीं किया गया है। वैज्ञानिक बता रहे हैं कि शहरों में हीट आइलैंड बन रहे हैं, जिसके लिए मुख्य रूप से सीमेंट–तारकोल और कृत्रिम वातानुकूलित (एसीवाली) जीवनशैली जिम्मेदार है। कंक्रीट और तारकोल के जंगलों का विस्तार करने को जब तक हम अपनी जरूरत समझते रहेंगे, तब तक हरे–भरे जंगलों को कटने से कोई नहीं रोक सकेगा। दुनियाँ की तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर देश जब तक जीडीपी से विकास को मापेगा, बेहिसाब औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की होड़ रहेगी, तब तक पर्यावरण असंतुलन एवं गर्मी का प्रकोप ऐसे ही विनाश का कारण बनता रहेगा।

इस बार बढ़ती गर्मी ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं, जो हमारे लिए चौंकाने से ज्यादा गंभीर चिंता की बात है। राजधानी दिल्ली के एक इलाके में अधिकतम पारा 52.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो देश के इतिहास का सबसे ज्यादा तापमान है। राजस्थान के चुरु और फलोदी आदि का पारा तो 50 के आसपास या ऊपर ही चल रहा है। जैसलमेर आदि स्थानों पर गर्मी इतनी तेज है कि धरती तवे की तरह तप रही है, लोगों ने पापड़ सेंक कर या आमलेट बनाते हुए दृश्य सोशल मीडिया पर दिखाया है। पानी की कमी, बिजली कटौती और गर्म लू के कारण बीमारी के हालात गंभीर होते जा रहे हैं। इतनी तेज गर्मी में पेयजल की उपलब्धता, बिजली की आपूर्ति व ट्रिपिंग की समस्या से निजात पाना मुश्किल हो रहा है। सवाल यह है कि इस भीषण लू या यों कहें कि हीटवेव के लिए बहुत कुछ हम और हमारा विकास का नजरिया भी जिम्मेदार है। आज शहरीकरण और विकास के नाम पर प्रकृति को विकृत करने में हमने कोई कमी नहीं छोड़ी है। पेड़ों की खासतौर से छायादार पेड़ों की अंधाधुंध कटाई एवं गाँवों में हो, या शहरों में आँख मींचकर कंक्रीट के जंगल खड़े करने की होड़ के दुष्परिणाम प्रकृति एवं पर्यावरण की विकरालता के रूप में सामने है। जल संग्रहण के परंपरागत स्रोतों को नष्ट करने में भी हमने कोई गुरेज नहीं किया। अब विकास, सुविधाओं और प्रकृति के बीच सामंजस्य की ओर ध्यान देना होगा, नहीं तो आने वाले साल और अधिक चुनौती भरे होंगे। कंक्रीट के जंगलों से लेकर हमारे दैनिक उपयोग के अधिकांश साधन एवं विकास की भ्रामक सोच तापमान को बढ़ाने वाले ही हैं।

विडंबना यह है कि ग्लोबल वार्मिंग की दस्तक देने के बावजूद विकसित व सम्पन्न देश पर्यावरण संतुलन के प्रयास करने तथा आर्थिक सहयोग देने से बच रहे हैं। ऐसा नहीं है कि मौसम की मार से कोई विकसित व संपन्न देश बचा हो, लेकिन प्राकृतिक संसाधनों के क्रूर दोहन से औद्योगिक लक्ष्य पूरे करने वाले ये

देश अब विकासशील देशों को नसीहत दे रहे हैं। निश्चित रूप से बढ़ता तापमान उन लोगों के लिए बेहद कष्टकारी है, जो पहले ही जीवनशैली से जुड़े रोगों एवं समस्याओं से जूझ रहे हैं। जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता असाध्य रोगों की वजह से चूक रही है। ऐसा ही संकट वृद्धों के लिए भी है, जो बेहतर चिकित्सा सुविधाओं व सामाजिक सुरक्षा के अभाव में जीवनयापन कर रहे हैं। वैसे एक तथ्य यह भी है कि मौसम के चरम पर आने, यानी अब चाहे बाढ़, शीत लहर या फिर लू हो, मरने वालों में अधिकांश गरीब व कामगार तबके के लोग ही होते हैं। जिनका जीवन गर्मी में बाहर निकले बिना या काम किए बिना चल नहीं सकता। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि उन्हें मौसम नहीं, बल्कि गरीबी मारती है।

जलवायु परिवर्तन का असर अब ज्यादा स्पष्ट तौर पर दिखने लगा है। अगर गर्मी पड़ रही है, तो पिछले कई दशक के रिकॉर्ड तोड़ रही है। अगर बारिश हो रही है, तो कुछ घंटों में ही पूरे मॉनसून की बरसात के बराबर पानी गिर रहा है। सर्दी भी साल–दर–साल नए रिकॉर्ड बना रही है। कुल मिलाकर हर मौसम अब अप्रत्याशित क्रूरतम रुख दिखा रहा है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, अल नीनो और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की दोहरी मार के कारण धरती के तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इससे धरती पर मौजूद सभी जीव–जंतुओं, वनस्पति और इंसानों को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। अनेक लोगों की भीषण गर्मी में जान चली गयी, बिहार की स्कूली छात्राएँ बड़ी सँख्या में बेहोश हो गयीं। इन जटिल स्थितियों को देखते हुए गर्मी के मौसम में काम के घंटों का निर्धारण एवं स्कूलों में गर्मी की छुट्टियों की अवधि मौसम की अनुकूलता के अनुरूप ही होनी चाहिए। आसन्न संकट को महसूस करते हुए दीर्घकालीन रणनीति, इस चुनौती से निपटने के लिए बनाने की जरूरत है।

दुनियाँ भर में अगले 20 साल के भीतर कूलिंग सिस्टम्स यानी एयरकंडीशन की मांग कई गुना बढ़ी है। सुविधावादी जीवनशैली एवं तथाकथित आधुनिकता ने पर्यावरण के असंतुलन को बेतहाशा बढ़ाया है। तापमान में भी साल–दर–साल बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। जहाँ तापमान ने नए रिकॉर्ड्स बनाने शुरू कर दिए हैं, वहीं, भारी बारिश के कारण बाढ़ के हालात बन रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण मौसम को लेकर अनिश्चितता बढ़ती जा रही है। सरकारों को नीतिगत फैसला लेकर बदलते मौसम की चुनौतियों को गंभीरता से लेना होगा। समय रहते बचाव के लिए नीतिगत फैसले नहीं लिए गए, तो एक बड़ी आबादी के जीवन पर संकट मंडराएगा। यह संकट तीखी गर्मी से होने वाली बीमारियों व लू से होने वाली मौतें ही नहीं होंगी, बल्कि हमारी कृषि एवं खाद्य सुरक्षा श्रृंखला भी प्रभावित होगी। हालिया अध्ययन बता रहे हैं कि मौसमी तीव्रता से फसलों की उत्पादकता में भी कमी आई है। दरअसल मौसम की यह तल्खी केवल भारत ही नहीं, वैश्विक स्तर पर नजर आ रही है। एशिया के अलावा यूरोप व अमेरिकी देशों में भी तापमान में अप्रत्याशित बदलाव नजर आ रहा है।

सरकारों को मानना होगा कि वैसे तो प्रकृति किसी तरह का भेदभाव नहीं करती, मगर सामाजिक असमानता के चलते वंचित समाज इसकी बड़ी कीमत चुकाता है। सरकार रेड अलर्ट व ऑरेंज अलर्ट की सूचना देकर अपने दायित्वों से पल्ला नहीं झाड़ सकती। खासकर ऐसे समय में जब हरियाणा व राजस्थान में पारा पचास पार करके गंभीर चुनौती का संकेत दे रहा है। स्कूल–कॉलेजों के संचालन, दोपहर की तीखी गर्मी के बीच कामगारों व बाजार के समय के निर्धारण को लेकर देश में एकरूपता का फैसला लेने की जरूरत है। कुछ जगह धारा 144 लागू की गई है, जो इस संकट का समाधान कदापि नहीं है। कभी संवेदनशील भारतीय समाज के संपन्न लोग सार्वजनिक स्थलों में प्याऊ की व्यवस्था करते थे। लेकिन आज संकट यह है कि पानी व शीतल पेय के कारोबारी मुनाफे के लिए सार्वजनिक पेयजल आपूर्ति को बाधित करने की फिराक में रहते हैं। सरकारें भी जल के नाम पर राजनीति करती हैं। दिल्ली के अनेक इलाकों में बढ़ती गर्मी के साथ जल आपूर्ति एक बड़ी समस्या बनी हुई है। हमारे राजनीतिज्ञ, जिन्हें सिर्फ वोट की प्यास है और वे अपनी इस स्वार्थ की प्यास को पानी से बुझाना चाहते हैं। विभिन्न प्रांतों के बीच का यह विवाद आज हमारे लोकतांत्रिक ताने–बाने को छिन्न–भिन्न कर रहा है, जनजीवन से खिलवाड़ कर रहा है। जीवनदायक वस्तुएँ प्रभु ने मुफ्त में दे रखी है। पानी, हवा एवं प्यार और आज वे ही विवादास्पद, दूषित और झूठी हो गयी हैं। इस तरह की तुच्छ एवं स्वार्थ की राजनीति करने वाले नेता क्या गर्मी एवं जल–समस्याओं का समाधान दे पायेंगे?

अशोक चौधरी

सामूहिक जन भागीदारी से पर्यावरण संरक्षण

जलवायु परिवर्तन के गंभीर संकट का प्रभाव आम जन–जीवन में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। घटते वन, विलुप्त हो रही वन्य जीवों की प्रजातियाँ, निरंतर बढ़ रहा धरती का ताप, ग्लेशियरों का पिघलना व समुद्री जल स्तर का बढ़ना इत्यादि उदारहण भयावह स्थिति को दर्शाते हैं। ये समस्याएँ ज्यादा पुरानी नहीं हैं, पिछले करीब 30–40 सालों में ये गंभीर संकट पैदा हुए हैं। इससे मानव प्रजाति भी अछूति नहीं रही है, उसे भी तरह–तरह की कोरोना जैसी महामारियों का सामना करना पड़ रहा है। इनके समाधान हेतु विश्व से स्थानीय स्तर तक प्रयास किए जा रहे हैं, तरह–तरह के कार्यक्रम, योजनाएँ बनाई जा रही हैं, किन्तु आम जन की सहभागिता नहीं मिल पाती है। लोगों में यह आम धारणा है कि ये तो सरकार या किसी एनजीओ का कार्यक्रम है, इससे हमें क्या लाभ होगा ? इस धारणा को बदलने से ही विश्वव्यापी जलवायु परिवर्तन के संकट का समाधान खोजा जा सकता है।

हमारी भारतीय सँस्कृति में सामाजिक, धार्मिक पद्धतियाँ इस प्रकार की रही हैं कि जिससे पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिलता था। कुछ रीति–रिवाज इस प्रकार के थे, जिनके वैज्ञानिक आधार भी है और जिन्हें जीवन में क्रियान्वित कर हम पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बन सकते हैं।

सामूहिक श्रमदान

महात्मा गाँधी के आश्रम का नियम था कि सभी आश्रमवासी मिलकर आश्रम परिसर की सफाई करते, उन्होंने झाडू को क्रांति का सुदर्शन चक्र माना था। 2014 में स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ प्रधानमंत्री ने किया और इस अभियान ने जन आंदोलन का रूप ले लिया। पहले लोगों को बाहर सार्वजनिक स्थलों पर सफाई करने में शर्म, झिझक महसूस होती थी, लेकिन स्वच्छ भारत अभियान के बाद सफाई का विचार हर घर, ऑफिस एवं जन–जन तक पहुँचा और इससे सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

गाँव में लोग नियमित रूप से सार्वजनिक स्थलों पर सामूहिक श्रमदान के कार्य करते हैं, सामूहिक भोजन करते हैं, इससे सार्वजनिक स्थल साफ होते हैं व प्रदूषण कम होता है। अवकाश के दिनों में शहरों में भी इस प्रकार के आयोजन हो, जिससे युवा पीढ़ी को जोड़ा जाए, ताकि उनमें पर्यावरण संरक्षण के रचनात्मक गुणों का विकास हो व हमारे परिवेश को भी साफ किया जा सके।

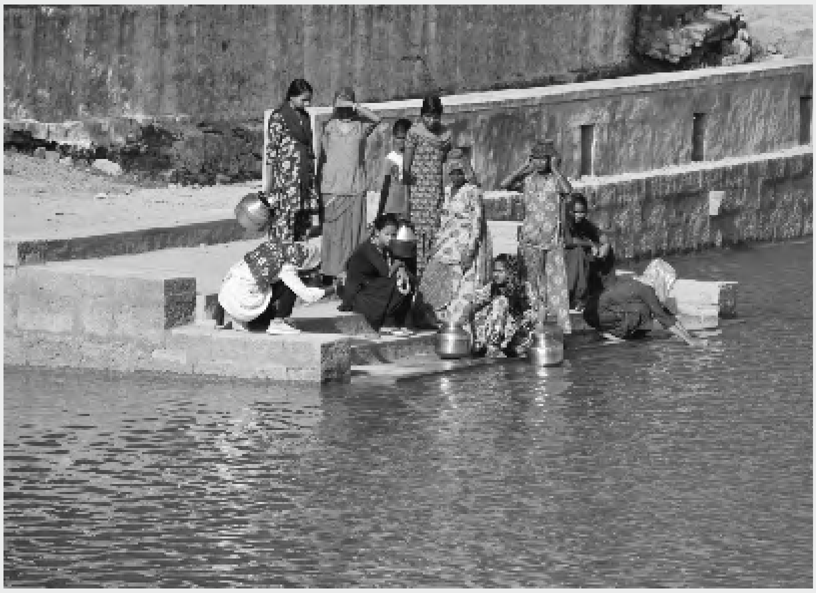

पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण

पेयजल संकट का सामना हर गाँव, शहर को करना पड़ रहा है, यह स्थिति तब है, जब जलदाय विभाग द्वारा नियमित जल आपूर्ति की जा रही है। अधिकांश क्षेत्रों का भूजल स्तर बहुत नीचे चला गया है, ऐसी स्थिति में हमारे पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण करना बहुत जरूरी है। भारत में विशेष रूप से राजस्थान में कुएँ, तालाब, बावड़ियों, खादीन की वृहद परंपरा रही है। सैकड़ों वर्षों पहले बने यह जल स्रोत आज भी मौजूद हैं, लेकिन इनमें से काफी देखरेख के अभाव में दुर्दशा के शिकार हो रहे हैं। सामूहिक जन भागीदारी से इनका संरक्षण किया जाए, ताकि इनमें उपलब्ध जल से पेयजल आपूर्ति की जा सके। इन जल स्रोतों को अतिक्रमण, कचरे से मुक्त कराया जाए। भारत में दीपदान का बहुत महत्व माना जाता है, लोग कई आयोजनों पर जल स्रोतों में दीपदान करते हैं, इन जल स्रोतों को समय–समय पर श्रमदान कर साफ रखें। हमारे यह पारंपरिक जल स्रोत न केवल पेयजल की आपूर्ति बल्कि पर्यटन को भी आकर्षित करते हैं, राजस्थान की चांद बावड़ी (दौसा), बाटाडू का कुआँ, गड़ीसर (जैसलमेर), पदम तालाब (रणथंभोर) जेत्था बेरा व तुरजी का झालरा (जोधपुर) इत्यादि विश्व प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त हर गाँव में तालाब की श्रृंखला है, जिनको संरक्षण कर जल प्रदाय की स्थिति में लाया जा सकता है, इनमें संग्रहित वर्षा जल से भूजल स्तर में भी सुधार होगा।

कचरे का निस्तारण – हर बड़े शहर की म्युनसिपॉल्टी के सामने कचरे के निस्तारण की गंभीर समस्या रहती है, भारत में लोग सारा कचरा इकट्ठा कर देते हैं, फिर वह कचरा जब डंपिंग स्टेशन में पहुँचता है, तो उसको अलग करना टेढ़ी खीर हो जाती है। घरों, प्रतिष्ठानों से ही सूखा, गीला व

हानिकारक कचरा अलग कर दिया जाए, ताकि हमारे डंपिंग स्टेशनों पर लोड ना बढ़े। इंदौर एवं अन्य शहरों में इस कचरे का प्रबंध कर इसे खाद, मिथैन गैस व बिजली बनाई जा रही है।

अपशिष्ट जल का निस्तारण

शहरों में घरों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों से निकले अपशिष्ट मैले पानी से हमारी नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। इस अपशिष्ट पानी में मरकरी, क्रोमियम, निकल, लेड, आर्सेनिक जैसे हानिकारक तत्वों की मात्रा रहती है। सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट्स में भी ट्रीटमेंट होने के बाद यह तत्व मौजूद रहते हैं। शहर के बाहरी क्षेत्रों में इस रसायन युक्त दूषित मैले पानी से सब्जियाँ, फलों की खेती होती है और यह सब्जियाँ–फल शहर में आते हैं। इन सब्जियों में मौजूद दूषित रसायनों से लोगों को हिपेटाइटिस ए, हिपेटाइटिस बी, डायरिया, पीलिया व टाइफाइड सहित गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। आजकल सब्जियों और फलों के माध्यम से माइक्रो प्लास्टिक हमारे शरीर में पहुँच रहा है।

प्लास्टिक का विकल्प

प्लास्टिक से बने सामानों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है; परंतु प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण के कारण हमारा स्वास्थ्य, पर्यावरण खतरे में है। हमें प्लास्टिक से बने उत्पादों के बजाए लकड़ी, मिट्टी, बांस से बने उत्पादों को प्राथमिकता देनी होगी। सिंगल यूज प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े, जूट के थैले काम में लें। प्लास्टिक के बर्तनों के स्थान पर स्टील, कांच के बने बर्तनों का उपयोग करें, जो लंबे समय तक टिकाऊ रूप से चलते हैं।

सार्वजनिक परिवहन व साइकलिंग

हर व्यक्ति दैनिक जीवन में पेट्रोल, डीजल और गैस से चलने वाले दोपहिया, चार पहिया वाहनों का प्रयोग करता है, लेकिन पेट्रोल, डीजल जैसे संसाधन सीमित हैं। आज हर बड़े शहर और कस्बे में सुबह शाम ट्रैफिक जाम की स्थिति देखी जा सकती है, इन वाहनों से निकलने वाला हानिकारक धुआँ, हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, इसके समाधान हेतु सार्वजनिक परिवहन के साधनों जैसे मेट्रो, बस, टेंपो इत्यादि का प्रयोग करें। कम दूरी के लिए साइकिल से जाएँ। जिम में ट्रेडमिल की बजाय, किसी पार्क में पैदल घूमें। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दें, ताकि हमारे पर्यावरण संरक्षण के कार्यों को बल मिले और पेट्रोल डीजल की खपत कम करके कार्बन के उत्सर्जन को घटाया जा सके।

पर्यावरण का संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति एक पर्यावरण अनुकूल आदत को अपनाएँ। सरकारी, गैर सरकारी सँस्थाओं के रचनात्मक कार्यक्रमों में भाग लें। जो लोग किसी सँस्था, क्लब से जुड़े हैं, वह अपने क्लब, सँस्था के माध्यम से अपने–अपने क्षेत्र में पौधारोपण, श्रमदान, जन जागरूकता की गोष्ठियाँ आयोजित कर जनमानस में जागृति फैलाएँ।

पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों का सूत्रपात

ग्लासगो में कॉप 26 में प्रधानमंत्री द्वारा मिशन लाइफ की अवधारणा पेश की गई एवं भारत में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस व प्रधानमंत्री द्वारा स्टैचू ऑफ यूनिटी से लागू किया गया। इस मिशन लाइफ कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनते हुए जैव विविधता संरक्षण कार्यों को प्रोत्साहित कर स्थाई जीवन शैली का आग्रह किया गया। इसमें जल, ऊर्जा की बचत, ठोस कचरा व ई–कचरा, प्लास्टिक, स्वस्थ जीवन शैली, खाद्य प्रणालियों इत्यादि बिंदुओं के अंतर्गत कई सुझाव दिए गए, जो आचरण योग्य थे व उनके क्रियान्वयन से लोगों को लाभ भी मिला। मिशन लाइफ जैसे कार्यक्रम न केवल सरकारी कार्यक्रमों से जनता को जोड़ते हैं, बल्कि लोगों की रचनात्मकता व उनकी रुचि को बढ़ाते हैं और पर्यावरण संरक्षण का कार्य कर रहे लोगों को प्रोत्साहन भी प्रदान करते हैं।

मालवा प्रांत का दुर्गावाहिनी का प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

विश्व हिंदू परिषद की राष्ट्रीय योजना अनुसार प्रतिवर्ष लगने वाले दुर्गावाहिनी के प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग मालवा प्रांत में प्रथम वर्ग नागदा जिले में परम पूज्य साध्वी हेमलता दीदी सरकार, सरोज सोनी राष्ट्रीय सह संयोजिका मातृशक्ति, श्रीमती पिंकी पवार राष्ट्रीय सह संयोजिका दुर्गावाहिनी, प्रांत मंत्री एवं दुर्गावाहिनी–मातृशक्ति पालक विनोद जी शर्मा, मालवा प्रांत दुर्गावाहिनी संयोजिका सुश्री ज्योति प्रिया शर्मा की उपस्थिति में 12 जिले से कुल सँख्या 480, जिसमें 440 शिक्षार्थी एवं 40 शिक्षिकाओं के द्वारा सेवा, सुरक्षा और संस्कार को आधार मानकर उद्घघाटन सत्र हुआ। यह वर्ग दिनांक 24 मई को अ.भा. सेवा प्रमुख अजेय जी पारीक के द्वारा दीक्षांत के साथ संपन्न हुआ।

vinodujn@gmail.com

ऐतिहासिक चुनाव और परिणाम भी रहे ऐतिहासिक

देश के इतिहास में पहली बार किसी दल या गठबंधन को लगातार तीसरी बार बहुमत, प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता बरकरार

मृत्युंजय दीक्षित

वर्ष—2024 के लोकसभा चुनाव परिणाम आ चुके हैं। देश के इतिहास में 1962 के बाद पहली बार किसी दल या गठबंधन को लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनाने जा रही है। इन लोकसभा चुनावों में भीषण गर्मी के बाद भी मतदाताओं ने बढ़—चढ़कर भाग लिया, धारा 370 हटने के बाद जम्मू—कश्मीर में भी रिकॉर्ड वोटिंग हुई। लगभग ढाई महीने लम्बी चली चुनाव प्रक्रिया में प्रारंभ में मतदान का प्रतिशत कुछ कम रहा, जिसके कारण सभी राजनीतिक दलों के माथे पर चिंता की रेखाएँ भी दिखाई पड़ीं। भारत में माना जाता रहा है कि अगर कम मतदान होता है, तो सरकार बदल जाती है, किंतु इस बार ऐसा नहीं हुआ है, यद्यपि इस बार भारतीय जनता पार्टी को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र व हरियाणा के कारण अकेले दम पर बहुमत नहीं मिल सका। पश्चिम बंगाल को छोड़कर चुनाव से लेकर मतगणना तक शांतिपूर्वक संपन्न हो गई।

इन लोकसभा चुनावों में भारत की जनता ने यह बता दिया है कि लोकतंत्र में वही सबसे बड़ी भविष्यवक्ता है। अबकी बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन ने 400 पार का नारा दिया था, वहीं कॉंग्रेस के नेतृत्व वाला इंडी गठबंधन कह रहा था कि वह मोदी जी को किसी भी कीमत पर 400 पार जाने से रोकेंगे। जनता ने भाजपा गठबंधन को 292 सीटें देकर सरकार तो बनवा दी है, किंतु विपक्ष को भी मजबूत कर दिया है। 2024 के लोकसभा चुनाव परिणाम राजनीतिक उथल—पुथल के पुराने समय की आशंका भी उत्पन्न करते हैं, जब गठबंधन सरकारें हुआ करती थीं, संतोष ये है कि इस समय गठबंधन का नेतृत्व मोदी जी के सबल हाथों में है।

2024 लोकसभा चुनावों के साथ संपन्न हुए चार प्रान्तों के विधान सभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी या उसके गठबंधन की ऐतिहासिक जीत हुई, जिसमें ओडिशा में पहली बार भारतीय जनता पार्टी पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने जा रही है, वहीं आंध्र प्रदेश में तेलुगूदेशम के साथ सरकर बनेगी, जबकि अरुणाचल प्रदेश में भी भाजपा लगातार तीसरी बार अपनी सरकार बनाने जा रही है। राजग गठबंधन की यह सफलता ऐसी है कि वह जीत कर भी उदास है और वहीं विपक्ष ऐसे हल्ला मचा रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता का जादू उतर गया है, जैसे उसे बहुमत मिल गया हो, जबकि वास्तविकता यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता का प्रभाव है कि उनके नेतृत्व में लगातार तीसरी बार सरकार बन गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जादू के ही कारण आज भाजपा का परचम लहरा रहा है और उसे मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान से लेकर हिमांचल प्रदेश, उत्तराखंड, दक्षिण भारत व पूर्वोत्तर राज्यों में अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। केरल जैसे राज्य में भाजपा का पहली बार खाता खुल गया है। वहीं तमिलनाडु में भाजपा का वोट प्रतिशत बढ़ गया है और उसके 10 प्रत्याशी दूसरे स्थान पर रहे हैं। ये सभी भाजपा के लिए शुभ संकेत हैं।

बंगाल अवश्य भारतीय जनता पार्टी के लिए एक बड़ी चिंता का विषय बन रहा है, क्योंकि वहाँ पर भाजपा ने संदेशखाली में महिलाओं पर अमानवीय अत्याचारों का मुद्दा उठाया था, जिससे अपेक्षा थी कि बंगाल में भाजपा की सीटें बढेंगी, किंतु वहाँ पर सीटें बढ़ने की बजाए घट गई हैं। बंगाल के लिए आगामी दिनों में भारतीय जनता पार्टी को विशेष ध्यान देना होगा। बंगाल में जब तक हिंसा होती रहेगी, तब तक भाजपा का बंगाल जीतना बहुत कठिन है। तुष्टिकरण के दम पर ममता ने वहाँ अच्छी पकड़ बना ली है।

सबसे बड़ी निराशा—भारतीय

जनता पार्टी को सबसे बड़ा झटका उप्र में लगा है और सबसे दुखद क्षण अयोध्या (फैजाबाद) संसदीय सीट में भारी पराजय रही। यहाँ की पराजय ने विजय के स्वाद को कसैला कर दिया है। जहाँ भव्य राम मंदिर, एयरपोर्ट, मेडिकल कॉलेज, नए बस व रेलवे स्टेशन बनने तथा वंदेभारत ट्रेन की सौगात देने के बाद भी भाजपा हार गई। फैजाबाद में हिन्दुत्व के अश्वमेध के घोड़े को जातिवाद के समीकरणों व तुष्टिकरण की राजनीति ने रोक दिया है। फैजाबाद की पराजय एक बहुत बड़ा सबक व संदेश है, हिंदू समाज के लिए। प्रदेश में योगी सरकार आते ही अयोध्या का कायाकल्प आरम्भ हो गया, दीपोत्सव के साथ ही नगर की आभा लौटने लगी, उपेक्षित पड़े क्षेत्र को विकास की मुख्य धारा में लाया गया। स्वयं मुख्यमंत्री ने विकास कार्यों की देखभाल की, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी 2024 और उससे पूर्व तथा फिर चुनाव के मध्य भी अयोध्या पहुँचकर रामलला के दर्शन किये तथा भव्य रोड शो निकाला। सब कुछ करने के बाद भी भाजपा का हार जाना दुखद है।

संतोष की बात यह रही कि कम मतदान प्रतिशत और उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे बड़े प्रान्तों में अपेक्षित सफलता न मिलने के बाद भी राजग गठबंधन को सामान्य बहुमत के साथ सरकार बनाने का अवसर मिल गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा मुख्यालय में आयोजित विजय कार्यक्रम में अपनी भावी सरकार की रूपरेखा व गारंटियों का एजेंडा भी प्रस्तुत कर दिया। नरेंद्र मोदी जी के रहते यह विश्वास बना रहेगा कि भारत सुरक्षित हाथों में है।

भाजपा की सीटें कम होने के संभावित कारण—प्रधानमंत्री मोदी को कमजोर करने के लिए अनेकानेक अभियान चलाये गये, षड्यंत्र रचे गए, जिसके कारण भाजपा की अपनी सीटों की सँख्या कम हो गई। विपक्ष ने उत्तर प्रदेश में अनेक अफवाहें फैलाई थीं, जिसमें सबसे बड़ी अफवाह यह थी कि मोदी जी प्रधानमंत्री बन जाएंगे, तो वह दो महीने बाद योगी जी को मुख्यमंत्री पद से हटा देंगे। भाजपा के कार्यकर्ता इस अफवाह पर नियंत्रण नहीं कर पाये, जिसका असर उत्तर प्रदेश व राजस्थान में कई क्षेत्रों में देखा गया। इसी तरह गृहमंत्री जी के भाषण का ए.आई. की सहायता से सम्पादित आरक्षण सम्बन्धी वीडियो भी बड़ा खेल कर गया, जब तक भाजपा कुछ समझ पाती, खेल हो चुका था। इन चुनावों में तथाकथित खान मार्केट गैंग ने भी भाजपा को नुकसान पहुँचाने में सफलता प्राप्त की है। नई दिल्ली से न्यूयॉर्क तक फैले इस गैंग ने संविधान बचाने तथा आरक्षण को लेकर लगातार फेक नैरेटिव चलाये, जिसका असर भी चुनाव परिणामों पर दिख रहा है। आरक्षण और संविधान बचाने के नाम पर मुस्लिम व दलित एक साथ हो गये तथा जिन इलाकों में मुस्लिम मतदाता चुनावों को प्रभावित रखने की क्षमता रखता है, वहाँ पर उसने भाजपा को हराने के लिए एक मुश्त मतदान किया है। उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश का बाराबंकी एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ पर मुस्लिम आबादी बहुत अधिक सँख्या में है। वहाँ पर उसने भाजपा को हराने के लिए वोट किया है, जबकि आम हिंदू मतदाता अपने घरों में बैठा रहा और वह पिकनिक मनाने के लिए निकल गया। कुछ सीटों पर हिंदू मतदाता भाजपा की ओर से अच्छा उम्मीदवार न होने के कारण भी शांत हो गया। लेकिन ये बात शायद कहीं गंभीर है और गहन विवेचना मांगती है, क्योंकि राजनाथ सिंह और मोदी जी को भी अपनी—अपनी सीटों पर संघर्ष करना पड़ा।

अंतिम सत्य यही है कि मतदाता ने एक बार फिर भाजपा गठबंधन को सरकार बनाने व पाँच साल सरकार चलाने का सुनहरा अवसर दिया है। यह भाजपा और नरेंद्र मोदी जी के लिए स्वर्णिम अवसर है। मतदाता ने आज भी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने, गगनयान जैसी वैज्ञानिक पहलों और राष्ट्र की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अपना विश्वास केवल और केवल मोदी पर व्यक्त किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले ही अपने वचनों की गारंटी ले चुके हैं, अतः अब हमें भी आने वाले पाँच वर्षों की तरह देखना चाहिए।

ymritvsk1973@gmail.com

गोरक्षा हेतु मुख्यमंत्री को ज्ञापन

अशोक नगर, 10 जून। आज विश्व हिंदू परिषद गौ रक्षा विभाग द्वारा प्रांत की योजनानुसार संपूर्ण 31 जिलों में गौ रक्षा के संबंध में 19 सूत्रीय ज्ञापन अशोक नगर जिले में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नाम कलेक्टर महोदय को दिया गया, जिसमें गौ रक्षा से संबंधित 21 बिंदुओं का मांग पत्र माननीय मुख्यमंत्री महोदय को प्रेषित किया गया। ज्ञापन देने वालों में बड़ा मंदिर मल्हारगढ़ के संत श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री राम गोपाल दास जी महाराज, प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉ दीपक मिश्रा जी, विभाग संयोजक वेदराम लोधी, विभाग गौ रक्षा प्रमुख लखन गुर्जर, सह गौरक्षा प्रमुख संतोष

शर्मा, प्रांत जैविक प्रमुख रघुवीर सिंह रघुवंशी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। ज्ञापन का वाचन विभाग प्रमुख संतोष शर्मा द्वारा किया गया।

deepakmishravhp@gmail.com

प्रहलाद सबनानी

क्या भारत कभी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन पाएगा

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं इतिहासकार श्री एंगस मेडिसिन के अनुसार वर्ष 1820 तक भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था। 1820 आते–आते चीन भारत से आगे निकल गया था। 1820 से 1870 के बीच चीन एवं भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में पूरे विश्व में सबसे आगे थे। वर्ष 1870 से 1900 के बीच ब्रिटेन विश्व की सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया; परंतु ब्रिटेन पर यह ताज अधिक समय तक नहीं टिक सका, क्योंकि इसके तुरंत बाद अमेरिका विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया था। इसके बाद तो आर्थिक प्रगति के मामले में अमेरिका एवं यूरोपियन देश लगातार आगे बढ़ते रहे, विकसित अर्थव्यवस्थाएँ बने और एशिया के देशों (विशेष रूप से भारत एवं चीन) का वर्चस्व वैश्विक अर्थव्यवस्था में लगभग समाप्त सा हो गया था। परंतु अब एक बार पुनः समय चक्र बदल रहा है तथा अमेरिका एवं यूरोपियन देशों की अर्थव्यस्थाएँ आर्थिक विकास के मामले में ढलान पर दिखाई दे रही हैं एवं एशिया के देश, विशेष रूप से भारत तथा चीन पुनः तेज गति से आर्थिक प्रगति करते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपना दबदबा कायम करते नजर आ रहे हैं।

आज अमेरिकी अर्थव्यस्था का आकार लगभग 25 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का है और चीन की अर्थव्यवस्था का आकार लगभग 18 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का है। ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2035 से 2040 के बीच चीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा एवं अमेरिका दूसरे नम्बर पर आ जाएगा और भारत तीसरे नम्बर पर आ जाएगा। परंतु इसके बाद क्या भारत अमेरिकी अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए दूसरे नम्बर पर आ पाएगा ? इस तरह की चर्चाएँ आजकल आर्थिक जगत में होने लगी हैं। आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्व में 11वाँ स्थान था, जो आज 3.70 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद के आकार के साथ विश्व में 5वें स्थान पर आ गई है। ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि वर्ष 2026 में भारतीय अर्थव्यवस्था, जर्मनी की अर्थव्यवस्था से आगे निकलकर विश्व में चौथे स्थान पर आ जाएगी। इसी प्रकार वर्ष 2027 में जापानी अर्थव्यवस्था को भी पीछे छोड़ते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व में तीसरे स्थान पर आ जाएगी। गोल्ड्मन सैच्स के अनुसार, अगले चार वर्षों के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक हो जाएगा। इसी प्रकार ब्लूमबर्ग के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था आगामी वर्षों में लगातार 6 प्रतिशत से अधिक की विकास दर हासिल करता रहेगा और अमेरिका एवं चीन की आर्थिक विकास दर से आगे बना रहेगा। भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास दर के तेज गति से आगे रहने के पीछे जो कारण बताए जा रहे हैं, उनमें शामिल हैं–भारतीय जनसँख्या में वृद्धि होते रहना (अमेरिका एवं चीन में जनसँख्या वृद्धि दर लगातार कम हो रही है), इससे भारतीय घरेलू बाजार मजबूत बना रहेगा एवं उत्पादों की मांग भी भारत में तेज गति से आगे बढ़ती रहेगी। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2050 तक भारत की आबादी बढ़ कर 170 करोड़ नागरिकों की हो जाएगी, इससे भारत अपने आप में विश्व का सबसे बड़ा बाजार बन जाएगा।

वर्ष 2024 में भारत में उपभोक्ता विश्वास सूचकांक 98.5 प्रतिशत तक

पहुँच गया है। दूसरे भारत में आधारभूत ढ़ांचे को विकसित करने के लिए भी केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा अत्यधिक मात्रा में पूंजी निवेश किया जा रहा है। भारत में आधारभूत ढ़ांचे को विकसित श्रेणी में लाने के लिए केवल रोड ही नहीं, बल्कि रेलवे, एयरपोर्ट, ऊर्जा एवं जल व्यवस्था को विकसित करने के लिए भी भरपूर पूंजी निवेश किया जा रहा है।

भारत में आज भी श्रमिक लागत तुलनात्मक रूप से बहुत कम है, इससे कई विदेशी कम्पनियाँ अब चीन के स्थान पर भारत में अपनी विनिर्माण इकाईयों को स्थापित कर रही हैं, इससे भारत के औद्योगिक विकास को गति मिल रही है। भारत ने भी कई उद्योग क्षेत्रों के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना लागू की है, जिसका लाभ विश्व की कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उठा रही हैं एवं अपनी औद्योगिक इकाईयाँ भारत में स्थापित कर रही हैं।

तीसरे भारत में आज 140 करोड़ की जनसँख्या में से 100 करोड़ से अधिक नागरिक युवा एवं कार्य कर सकने वाले नागरिकों की श्रेणी में शामिल हैं। इतनी बड़ी मात्रा में श्रमिकों की उपलब्धि किसी भी अन्य देश में नहीं है। अन्य विकसित देशों चीन सहित, में कार्य कर सकने वाले नागरिकों की सँख्या लगातार कम हो रही है, क्योंकि इन देशों में प्रौढ़ नागरिकों की सँख्या लगातार बढ़ रही है। किसी भी देश में युवा जनसँख्या का अधिक होने से न केवल श्रमिक के रूप में इनकी उपलब्धि आसान बनी रहती है, बल्कि इनके माध्यम से देश में उत्पादों की माँग में भी वृद्धि दर्ज होती है तथा युवा जनसँख्या की उत्पादकता भी अधिक होती है, जिससे उत्पादन लागत कम हो सकती है। साथ ही युवाओं द्वारा नवाचार भी अधिक मात्रा में किया जा सकता है। यह सब कारण हैं, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरे विश्व में एक चमकता सितारा बनाने में सहायक हो रहे हैं।

हाल ही के समय में वैश्विक स्तर पर आर्थिक क्षेत्र का परिदृश्य तेजी से बदला भी है। अभी तक वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकसित देशों का दबदबा रहता आया है। परंतु अब अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के एक अनुमान

के अनुसार वर्ष 2024 में भारत सहित एशियाई देशों के वैश्विक अर्थव्यवस्था में 60 प्रतिशत का योगदान होने की प्रबल सम्भावना बन रही है। एशियाई देशों में चीन एवं भारत मुख्य भूमिकाएँ निभाते नजर आ रहे हैं। प्राचीन काल में वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान लगभग 32 प्रतिशत से भी अधिक रहता आया है। वर्ष 1947 में जब भारत ने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी, उस समय वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान लगभग 3 प्रतिशत तक नीचे पहुँच गया था, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था को पहले अरब से आए आक्राताओं एवं बाद में अँग्रेजों ने बहुत नुकसान पहुँचाया था एवं भारत को जमकर लूटा था। वर्ष 1947 के बाद के लगभग 70 वर्षों में भी वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारतीय अर्थव्यवस्था के योगदान में कुछ बहुत अधिक परिवर्तन नहीं आ पाया था। परंतु पिछले 10 वर्षों के दौरान देश में लगातार मजबूत होते लोकतंत्र के चलते एवं आर्थिक क्षेत्र में लिए गए कई पारदर्शी निर्णयों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को तो जैसे पंख लग गए हैं। आज भारत इस स्थिति में पहुँच गया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में वर्ष 2024 में अपने योगदान को लगभग 18 प्रतिशत के आसपास एवं एशिया के अन्य देशों यथा चीन, जापान एवं अन्य देशों के साथ मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था में एशियाई देशों के योगदान को 60 प्रतिशत तक ले जाने में सफल होता दिखाई दे रहा है।

भारत आज अमेरिका, चीन, जर्मनी एवं जापान के बाद विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। साथ ही भारत आज पूरे विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में तो भारत की आर्थिक विकास दर 8.2 प्रतिशत की रही है और यह वित्तीय वर्ष 2023–24 की समस्त तिमाहियों में लगातार तेज गति से बढ़ती रही है। पहली तीन तिमाहियों में भारत की आर्थिक विकास दर 8 प्रतिशत से अधिक रही है, अक्टूबर–दिसम्बर 2023 को समाप्त तिमाही में तो आर्थिक विकास दर 8.4 प्रतिशत की रही है। इस विकास दर के साथ भारत के वर्ष 2025 तक जापान की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की प्रबल सम्भावना बनती दिखाई दे रही है। केवल 10 वर्ष पूर्व ही भारत विश्व की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था और वर्ष 2013 में मोर्गन स्टैनली द्वारा किए गए एक सर्वे के अनुसार भारत विश्व के उन 5 बड़े देशों (दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, इंडोनेशिया, टर्की एवं भारत) में शामिल था, जिनकी अर्थव्यवस्थाएँ नाजुक हालत में मानी जाती थीं। अब आगे आने वाले कालचक्र में वैश्विक स्तर पर आर्थिक क्षेत्र में परिस्थितियाँ लगातार भारत के पक्ष में होती दिखाई दे रही हैं, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्विक अर्थव्यवस्था में योगदान लगातार बढ़ते जाने की प्रबल संभावनाएँ बनती नजर आ रही हैं।

prahlad.sabnani@gmail.com

अस्तित्व ही परमात्मा है

आचार्य राघवेंद्र दास

परमात्मा कहाँ है? किसी जंगल में, किसी किताब में, या जलाशय में, या स्थान विशेष पर? प्रायः यह प्रश्न हम मनुष्यों के मन में उठा करते हैं। और यदि वह कोई स्थान या वस्तु विशेष में ही केवल प्रतिष्ठित है, तो उसके सर्वसत्तावान होने पर प्रश्न चिन्ह है। लोक व्यवहार में देखा जाता है कि लोग कहते हैं कि जीवित पदार्थों में उसकी सत्ता है। तो क्या मृत में नहीं? और जिसे हम मृत कहते हैं, वह क्या वास्तव में मृत है? नहीं। सांख्य दर्शन का अत्यंत प्रसिद्ध सिद्धांत है 'सत्कार्यवाद', यह कहता है असत् से सत् की प्राप्ति नहीं हो सकती। सत्कार्यवाद सिद्धांत का प्रतिपादन ईश्वरकृष्ण इस प्रकार करते हैं–

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।

अर्थात कार्य वास्तव में अपने कारण में विद्यमान रहता है, कार्य के पूर्व अव्यक्तरूप में। कार्य की उत्पत्ति अथवा नाश का अभिप्राय, उस विषय की सत्ता का होना या न होना नहीं है, अपितु कारण से कार्य की उत्पत्ति का अर्थ है, अव्यक्त से व्यक्त होना और कार्य नाश से अभिप्राय व्यक्त से अव्यक्त होना है।

सांख्य दर्शन के सत्कार्यवाद को उद्धृत करने का अभिप्राय यही था कि जिसे हम निर्जीव समझते हैं, वह वस्तुतः निर्जीव नहीं होता, विवृति प्रक्रिया का हिस्सा होता है, क्योंकि पुनः उन पदार्थों से जीवन को उद्भूत होते देखा जाता है। इसलिये हमारे यहाँ कहा गया–

एकं सर्वगतं व्योम बहिरन्तर्यथा घटे।
नित्यं निरन्तरं ब्रह्म सर्वभूतगणे तथा ।।

(अष्टावक्र गीता, 1/20)

अर्थात जैसे एक सर्वगत आकाश ही घड़े के भीतर और बाहर स्थित है, वैसे ही देश, काल और वस्तु के परिच्छेद से रहित, सजातीय–विजातीय–स्वगत–भेदशून्य नित्य, निरन्तर ब्रह्म ही समस्त दृश्य पदार्थों के बाहर और भीतर स्थित है। हमारी मनः कल्पना जहाँ तक जा नहीं जा सकती, वहाँ तक परमात्मा है। वह देश–काल से आबद्ध नहीं मुक्त है, वस्तुतः देश–काल और अनन्त ब्रह्मांड ही उसमें है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को विश्वरूप दर्शन दिया, अर्जुन भगवान की स्तुति करते हुए कहते हैं–

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्।।

(श्रीमद्भगवद्गीता, 11/19)

अर्थात हे भगवन! आपको आदि, अन्त और मध्य से रहित, अनन्त सामर्थ्य से युक्त, अनन्त भुजा वाले, चन्द्र–सूर्य रूप नेत्रों वाले, प्रज्वलित अग्नि रूप मुखवाले और अपने तेज से इस जगत को तप्त करते हुए देख रहा हूँ।

पुनः देखें– नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिंपश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।

(श्रीमद्भगवद्गीता, 11/16)

अर्थात हे विश्वरूप ! मैं आपके न अन्त को देखता हूँ, न मध्य को और न आदि को ही। एक पृथ्वी ही नहीं अनन्त–अनन्त

ग्रहों वाला ब्रह्मांड भी उस परमात्मा में ही है। वह निरतिशय है, अर्थात् उससे बड़ा कोई नहीं है। जिससे बड़ा कोई नहीं है, उसकी स्थापना वस्तु विशेष में करना और अन्यों में अभाव देखना, दृष्टिदोष ही कहा जायेगा। भक्त कवि गोस्वामी तुलसी दास जी के शब्दों में वह "ब्रह्मांड निकाया" है। अष्टावक्र गीता की दृष्टि में ज्ञान अस्तित्व में स्वयं का बोध करना ही है–

आकाशवदनन्तोहं घटवत्प्राकृतं जगत्।
इति ज्ञानं तथैतस्य न त्यागो न ग्रहो लयः।।

(अष्टावक्र गीता, 06/01)

अर्थात मैं आकाश के समान अनन्त हूँ और प्राकृतिक जगत घटवत है, यही ज्ञान है और ऐसी अवस्था में न तो जगत का त्याग है, न ग्रहण है और न तो लय ही है, अनन्त देश की दृष्टि से अल्प देश नहीं होता।

अस्तित्व में स्वयं को समझना, जैसे बूँद का समुद्र में समाहित हो स्वयं का सत्ताभास तिरोहित कर विशाल जलराशि में अपनी एकत्वता समझना। इस संबंध में अष्टावक्र गीता का एक और श्लोक द्रष्टव्य जो अस्तित्व बोध कराती है–

तवैवाज्ञानतो विश्वं त्वमेकः परमार्थतः।
त्वत्तोन्यो नास्ति संसारी नासंसारी च कश्चन्।।

(अष्टावक्र गीता, 15/16)

अर्थात तुम्हारे स्व स्वरूप के अज्ञान से ही विश्व की सत्ता है, परमार्थतः एकमात्र तुम ही हो, तुमसे भिन्न न तो कोई जीव है और न ईश्वर। ठीक–ठीक इसकी ही पुष्टि अवधूत गीता का निम्न श्लोक करती है–

यो वै सर्वात्मको देवो निष्कलो गगनोपमः।
स्वभावनिर्मलः शुद्धः स एवाहं न संशयः।।

(अवधूत गीता, 01/06)

अर्थात जो सर्वरूप परमात्मा हैं, वे निश्चय ही अखण्ड, आकाशतुल्य, स्वभाव से निर्मल व शुद्ध हैं, मैं वहीं हूँ, इसमें संदेह नहीं है। वस्तुतः जब हिन्दू दर्शन परमात्मा के कण–कण में उपस्थिति की उद्घोषणा करता है, तो यह उसकी चरम स्थिति होती है। इसलिए ध्यातव्य हो पुराणों में अधर्म को विष्णु का पार्श्व कहा गया है, जिसका तत्वतः अर्थ है कि सब कुछ परमात्मा का है और अस्तित्व में जो कुछ भी चल रहा है, उसकी क्रीड़ा है। जब हम पाप आदि को किसी और सत्ता को मानेंगे, तो परमात्मा की निरतिशयता पर प्रश्न चिन्ह हो जायेगा। इसलिये हिन्दू दर्शन ने अस्तित्व को ही परमात्मा बतलाया है और सिद्धि की चरमता अस्तित्व में स्व का लय और अन्नतर अस्तित्वबोध कहा है।

'बजरंग दल सह संयोजक ने लगाए ३८ हजार ६०० पौधे, १ लाख पौधे लगाने का लक्ष्य'

इंदौर। भीषण गर्मी में इंसान हो या पशु–पक्षी, शुद्ध हवा और ठंडी छांव, उन्हें मिले तो कहाँ से मिले, क्योंकि हर दिन पेड़ों की कटाई होती जा रही है, ऐसी गर्मी में इंसान तो फिर भी राहत पा लेता है, लेकिन पशु–पक्षी बेचारे जाएँ तो जाएँ कहाँ? इन सबको बचाने के लिए, प्रकृति को बचाने का हम सभी को संकल्प लेना होगा, हम प्रतिवर्ष पेड़ों का संरक्षण करें तथा प्रतिवर्ष पौधे लगाएँ, यह बात प्रकृति प्रेमी अर्जुन गहलोत ने कही, जो अपने जीवन में अभी तक 38 हजार 600 पौधे लगाने का एक कीर्तिमान रच चुके हैं तथा उनका लक्ष्य 1 लाख पौधे लगाने का है।

अर्जुन गहलोत प्रतिवर्ष पौधे लगाते हैं, जहाँ अवसर मिलता है, जैसा समय मिलता है, जन्मदिन, नवरात्रि, हरियाली अमावस्या या अन्य कोई उत्सव हो, वे सभी अवसरों पर पौधे लगाकर समाज को प्रकृति संरक्षण का संदेश देते हैं। उन्होंने बताया कि आने वाली वर्षा ऋतु में वह स्वयं 2100 पौधे लगाएंगे, वे जो पौधे लगाते हैं, उनमें अधिकतर नीम, पीपल, साल, इमली, बरगद, शीशम, सरस, गुलमोहर, आम, बेलपत्र आदि के पौधे होते हैं।

गहलोत ने इस वर्ष पंछियों के लिए पानी पीने के लिए 100 से भी

ज्यादा स्थानों पर पानी के बर्तन लगाए हैं। उन्हें ये प्रेरणा उनके दादाजी से मिली है, गहलोत के दादाजी भी समाज सेवा में निरंतर लगे रहे। अर्जुन गहलोत अभी तक मंदसौर, रतलाम, आलोट, नीमच, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर में तनोटराय माता मंदिर, बड़वाह, गरोठ, बालाघाट, अलग–अलग कई स्थानों पर पौधे लगा चुके हैं। गहलोत ने कहा कि मेरी प्रत्येक व्यक्ति से यही प्रार्थना है कि भीषण गर्मी से बचने के लिए, प्रकृति के रक्षण के लिए, पेड़ों के संरक्षण हेतू आगे आएँ। जीवन जीने का जो आनंद है, वो प्राकृतिक सौंदर्य में ही छुपा है। वर्तमान में गहलोत विश्व हिन्दू परिषद में पूर्णकालिक हैं और बजरंग दल मालवा प्रांत के सह संयोजक हैं।

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वधेल, सबरीन बशीर, डॉ. आकांक्षा शुक्ला, आलोक मोहन

ढाक के पत्ते

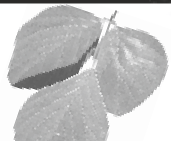

पारंपरिक विश्वासों और आधुनिक विज्ञान का समन्वय

ब्यूटिया मोनोस्पर्मा, जिसे सँस्कृत में पलास और 'जंगल की लौ' के रूप में जाना जाता है, भारत और दक्षिण एशिया में हिंदू और बौद्ध परंपराओं में पूजनीय पेड़ है। यह पेड़ अपने जीवंत लाल और नारंगी फूलों के लिए माना जाता है, जो इसकी आकर्षक उपस्थिति और साँस्कृतिक महत्व में योगदान करते हैं। ढाक, धानक, पलाश, टेसू और तेनसू जैसे विभिन्न नामों से स्थानीय रूप से जाना जाता है, ब्यूटिया मोनोस्पर्मा न केवल एक वनस्पति चमत्कार है, बल्कि कई धार्मिक और साँस्कृतिक प्रथाओं की आधारशिला भी है। पेड़ के बहुआयामी उपयोग और अनुष्ठानों में इसकी गहरी उपस्थिति इसकी श्रद्धेय स्थिति को रेखांकित करती है।

साँस्कृतिक और धार्मिक महत्व

ढाक के पेड़ का साँस्कृतिक और धार्मिक महत्व हिंदू और बौद्ध परंपराओं में गहराई से अंतर्निहित है। इसके पत्ते, फूल और लकड़ी विभिन्न समारोहों और अनुष्ठानों के अभिन्न अंग हैं। पवित्र धागा समारोह के दौरान, जिसे यज्ञोपवीत के रूप में जाना जाता है, ढाक की पत्तियों को थाली के रूप में उपयोग किया जाता है, जबकि इसकी सूखी टहनियाँ पवित्र अग्नि को ईंधन देती हैं। जीवंत फूल पूजा समारोहों में प्रसाद हैं, जो स्वास्थ्य, भाग्य और समृद्धि के आह्वान का प्रतीक हैं। अध्वर्यु पुजारियों के अनुष्ठानों में, गायों से बछड़ों को भगाने के लिए पूर्ण या अमावस्या से एक दिन पहले एक ढाक शाखा को काटकर तैयार किया जाता है, जिसका दूध समारोह में उपयोग किया जाता है। यह अभ्यास पेड़ की पवित्रता और धार्मिक अनुष्ठानों में शुद्धता और पवित्रता सुनिश्चित करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

ब्यूटिया मोनोस्पर्मा पौराणिक कथाओं और ज्योतिषीय महत्व में डूबा हुआ है। हिंदू पौराणिक कथाओं में, ढाक के पेड़ को अग्नि (अग्नि) का एक रूप माना जाता है, जो क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और शिव द्वारा दर्शाए गए सृजन, संरक्षण और विनाश की दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है। वायु पुराण के अनुसार, होमा या यज्ञ अनुष्ठानों में ढाक की लकड़ी का उपयोग करना अत्यधिक शुभ है, जो इसकी पवित्र स्थिति को मजबूत करता है। ज्योतिष में, पेड़ बुध (बुध) और सूर्य (सूर्य) से जुड़ा हुआ है, जो इसकी पूजनीय स्थिति में एक और परत जोड़ता है। पेड़ का महत्व बौद्ध परंपराओं तक फैला हुआ है, जहाँ यह माना जाता है कि दूसरे बुद्ध ने अपनी छतरी के नीचे ज्ञान प्राप्त किया था।

आर्थिक और औषधीय उपयोग

अपने आध्यात्मिक महत्व से परे, ब्यूटिया मोनोस्पर्मा आर्थिक और औषधीय लाभों की एक श्रृंखला समेटे हुए है। पेड़ के औषधीय गुण व्यापक हैं। इसके विभिन्न भागों का उपयोग त्वचा की स्थिति, खांसी, सर्दी, पेट की बीमारियों, कीड़े, कुष्ठ रोग और पेचिश के इलाज के लिए किया जाता है। यह इसे पारंपरिक चिकित्सा में एक मूल्यवान संसाधन बनाता है। इसके अतिरिक्त, लकड़ी का उपयोग फर्नीचर, कृषि उपकरणों और लकड़ी का कोयला बनाने के लिए ईंधन के रूप में किया जाता है। जड़ों से रस्सी बनाया जाता है और पत्तियों का उपयोग कंटेनर बनाने के लिए किया जाता है। फूल, उनके औपचारिक उपयोग से अलग, उनके प्राकृतिक डाई स्वरूप में भी उपयोग किए जाते हैं, जो कपड़े और सजावट को रंगने के लिए एक स्थायी विकल्प प्रदान करते हैं।

त्योहारों और पारंपरिक प्रथाओं में भूमिका

ढाक का पेड़ विभिन्न त्योहारों और पारंपरिक प्रथाओं में विशेष रूप से होली के त्योहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उत्तराखंड में, ढाक के फूलों से प्राप्त रंगों के साथ होली मनाना अत्यधिक शुभ माना जाता है, जो उत्सव में एक पारंपरिक स्पर्श जोड़ता है। पेड़ की पत्तियों का उपयोग आशीर्वाद अनुष्ठानों

और समारोहों में किया जाता है, जो पवित्रता और दिव्य आशीर्वाद का प्रतीक है। प्रसिद्ध हिंदी कहावत, 'ढाक के तीन पात', ढाक के पेड़ की तीन पत्तियों को संदर्भित करती है, जिसका उपयोग अक्सर स्थिरता और जीवन के कुछ पहलुओं की अपरिवर्तनीय प्रकृति को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह समाज के साँस्कृतिक और लौकिक ताने – बाने में पेड़ के एकीकरण पर प्रकाश डालता है।

तांत्रिक और मांत्रिक अनुष्ठानों में, ढाक वृक्ष महत्वपूर्ण महत्व रखता है। पेड़ के सफेद फूलों को इन अनुष्ठानों के लिए सबसे अच्छा माना जाता है, जिनका उपयोग वशीकरण (जादू) और समृद्धि (समृद्धि) प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रथाओं में किया जाता है। शंकराचार्य के मंत्रों और उद्दरेश्वर तंत्र में भी पेड़ का महत्व है, जहाँ देवता कालकर्णी यक्षनी को प्रसन्न करने के लिए ढाक का प्रसाद बनाया जाता है। यह पेड़ की बहुमुखी प्रतिभा और विभिन्न गूढ़ परंपराओं में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण : ब्यूटिया मोनोस्पर्मा का वैज्ञानिक अध्ययन और स्वास्थ्य पर प्रभाव

एंटिफंगल गतिविधि, रोगाणुरोधी गतिविधि, जीवाणुरोधी गतिविधि : ब्यूटिया मोनोस्पर्मा की तने की छाल एंटिफंगल गतिविधि प्रदर्शित करती है, जो एक सक्रिय घटक (–)–मेडिकार्पिन की उपस्थिति के कारण होती है। ब्यूटिया मोनोस्पर्मा के बीज का तेल इन –विट्रो परीक्षण में महत्वपूर्ण जीवाणुनाशक और कवकनाशी प्रभाव दिखाता है।

सुजन रोधी गतिविधि : ब्यूटिया मोनोस्पर्मा की पत्तियाँ खरगोशों की आँख में सुजन रोधि गतिविधि प्रदर्शित करती हैं।

यकृत विकार : भारत में यकृत विकारों के उपचार के लिए ब्यूटिया मोनोस्पर्मा के फूलों से एक अर्क का उपयोग किया जाता है और दो एंटी–हेपेटोटॉक्सिक फ्लेवोनोइड्स–आइसोब्यूट्रिन और ब्यूट्रिन को अर्क से अलग किया गया है। इस प्रकार के अर्क से यकृत विकार का इलाज हो पाता है।

एंटीस्ट्रोजेनिक और एंटीफर्टिलिटी गतिविधि : ब्यूटिया मोनोस्पर्मा के फूलों के मादक अर्क को भी एंटीस्ट्रोजेनिक गतिविधि प्रदर्शित करने के लिए सूचित किया गया है। चूहों और खरगोशों को दिए जाने पर महत्वपूर्ण एंटी ओव्यूलेटरी और एंटी–इम्प्लांटेशन गतिविधियों के लिए ब्यूटिया मोनोस्पर्मा बीज के मादक अर्क की गतिविधि पाता चली है। सक्रिय घटक की पहचान ब्यूटिन के रूप में की गई है। ब्यूटिन पुरुष गर्भनिरोधक गुणों को भी प्रदर्शित करता है।

एंटीडायबिटिक गतिविधि : ब्यूटिया मोनोस्पर्मा फूलों के इथेनॉल निकालने का उपचार ग्लूकोज सहिष्णुता में काफी सुधार करता है और दवा प्रेरित मधुमेह चूहों में रक्त शर्करा के स्तर में कमी का कारण बनता है। ब्यूटिया मोनोस्पर्मा बीज के इथेनॉल निकालने के मौखिक प्रशासन गैर इंसुलिन निर्भर मधुमेह पिड़ित चूहों में महत्वपूर्ण मधुमेहरोधी, हाइपोलिपेमिक और एंटीपेरोक्सीडेटिव प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

घाव भरने की गतिविधि : त्वचीय घावों पर ब्यूटिया मोनोस्पर्मा के एक मादक छाल निकालने के सामयिक प्रशासन ने चूहों में उपचार दिखाया है। चूहे की पीठ पर फुल–थिकनेस एक्सिशन घाव किए गए थे। अर्क ने घाव स्थल पर सेलुलर प्रसार और कोलेजन संश्लेषण में वृद्धि की, जैसा कि डीएनए में वृद्धि, कुल प्रोटीन और दानेदार ऊतकों की कुल कोलेजन सामग्री से प्रमाणित हुआ है। ब्यूटिया मोनोस्पर्मा ने अपने एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण घाव भरने की गतिविधियों का प्रदर्शन किया।

दस्त : पुरानी दस्त के मामलों में ब्यूटिया मोनोस्पर्मा गम भी उपयोगी पाया गया है। यह एक शक्तिशाली कसैला पदार्थ है और बिलीरुबिन स्तर को भी कम करता है।

कृमिनाशक गतिविधि : ब्यूटिया मोनोस्पर्मा के पौधे के बीज का उपयोग आयुर्वेदिक प्रणाली में कृमिनाशक दवा के रूप में किया जाता है। ब्यूटिया मोनोस्पर्मा बीज का कच्चा पाउडर भेड़ में एक खुराक एवम समय–निर्भर कृमिनाशक गतिविधि दिखाता है।

फ्री रेडिकल स्कैवेंजिंग गतिविधि : विभिन्न इन–विट्रो मॉडल का उपयोग करके विभिन्न फूलों के अर्क की फ्री रेडिकल स्कैवेंजिंग गतिविधि का मूल्यांकन किया गया है। इस प्रकार की गतिविधि अर्क में उच्च फेनोलिक सामग्री के कारण हो सकता है.

थायराइड निरोधात्मक, एंटीपेरोक्सीडेटिव और हाइपोग्लाइसेमिक प्रभाव : स्टिग्मास्टरोल, ब्यूटिया मोनोस्पर्मा की छाल से अलग थायरॉयड अवरोधक और हाइपोग्लाइसेमिक गुण दिखाते हैं। यकृत लिपिड पेरोक्सीडेशन (एलपीओ) में कमी और उत्प्रेरक (सीएटी), सुपरऑक्साइड डिसम्यूटेज (एसओडी) और ग्लूटाथियोन (जीएसएच) की गतिविधियों में वृद्धि के कारण एंटीऑक्सीडेटिव क्षमता काफी अधिक होती है।

समाप्ति – ब्यूटिया मोनोस्पर्मा, या जंगल की लौ, दक्षिण एशिया में अत्यधिक साँस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक महत्व का एक पेड़ है। इसके जीवंत फूल और बहुमुखी उपयोग इसे पारंपरिक प्रथाओं की आधारशिला और दिव्य ऊर्जा का प्रतीक बनाते हैं। चाहे पवित्र अनुष्ठानों, औषधीय अनुप्रयोगों या पारंपरिक त्योहारों के संदर्भ में, ढाक का पेड़ एक पोषित और श्रद्धेय उपस्थिति बनाए रखता है। इसकी विरासत दक्षिण एशियाई सँस्कृतियों में प्रकृति और आध्यात्मिकता के बीच गहरे संबंध का एक वसीयतनामा है, जहाँ पेड़ पवित्र और शाश्वत के जीवित प्रतीक के रूप में खड़ा है।

खीरे के औषधीय गुण

खीरे के बिना हर सलाद अधूरा सा है। परन्तु क्या आपको पता है सलाद का स्वाद बढ़ाने वाला खीरा आपकी सेहत को भी बनाता है। खीरा पानी का बहुत बड़ा स्रोत होता है। गर्मी के मौसम में स्वास्थ्य का ध्यान रखना अधिक जरूरी है। खीरा शरीर को शीतलता और ताजगी प्रदान करता है। खीरा ब्यूटी के अलावा आपकी सेहत के लिए भी फायदेमंद है। खीरे में विटामिन बी, सी, पोटेशियम, फास्फोरस, आयरन आदि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यही नहीं खीरा कई रोगों को भी दूर भगाता है। जो लागे मोटापे से परेशान रहते हैं, उन्हें सबेरे इसका सेवन करना चाहिए। खीरे में नमक, काली मिर्च और नीबूं डालकर खाने से ये स्वादिष्ट तो लगता ही है, साथ ही खाना पचाने में मदद करता है।

खीरे के रस में दूध, शहद व नींबू मिलाकर चेहरे पर लगाने से त्वचा मुलायम और कांतिवान हो जाती है। खीरे में फाइबर अधिक होता है, साथ ही कैलोरी भी अच्छी मिलती है। खीरे में इरेप्सिन नामक एजांइम होता है, जो प्रोटीन को पचाने में सहायता करता है।

पानी की कमी दूर करे : खीरे में 96 प्रतिशत पानी होता है, जो कि कड़ी गर्मी में शरीर को तर रखता है। यह शरीर से सारी गंदगी बाहर निकालता है।

स्किन केयर : इसमें विटामिन ए, बी और सी तथा अनेकों प्रकार के मिनरल जैसे मैगनीशियम, सिलिका और कैल्शियम आदि होते हैं, जो कि त्वचा के लिए अच्छे माने जाते हैं। खीरे की स्लाइस को त्वचा पर लगाने से बहुत लाभ भी मिलता है। इसको चेहरे पर लगाने से त्वचा टाइट बनती है।

आँखों के लिए लाभकारी : यदि आँखों के नीचे सूजन आ गई है, तो खीरे की स्लाइस लगाने से वह ठीक हो जाती है। इसके अलावा यदि स्किन में सनबर्न हो जाए, तो खीरे का रस लगाना चाहिए।

पाचन सही करे : खीरे में पानी की मात्रा अधिक पाई जाती है। इसलिए कब्ज, एसिडिटी, सीने में जलन या गैस्टिक की कोई भी समस्या हो, तो खीरे के लगातार सेवन से सही हो सकती है।

बालों की ग्रोथ बढाए : इसमें सिलिकॉन तथा सल्फर होने के नाते यह बालों को घने व चमकदार रखने के साथ ही उनकी ग्रोथ भी बढ़ाता है। खीरे के रस के साथ गाजर का जूस तथा पालक का रस मिला कर पिएँ।

दक्षिण बिहार प्रांत के दुर्गा वाहिनी वर्ग का उद्घाटन

पटना। विश्व हिंदू परिषद की दुर्गा वाहिनी का सात दिवसीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग एम एस मेमोरियल एकेडमी, पटना में उद्घाटन अवसर पर कार्यक्रम की भूमिका रखते हुए क्षेत्र मातृशक्ति संयोजिका डॉ. शोभा रानी सिंह ने वर्ग के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। बहनों को सम्बोधित करते हुए क्षेत्र मंत्री वीरेंद्र विमल जी ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद की युवती विभाग दुर्गावाहिनी का गठन 1991 में हुआ। हम अपनी बहनों को हिन्दू संस्कृति से ओत प्रोत कर सकें तथा हिंदुत्व के भाव को प्रबल कर सकें, इस हेतु देश भर में दुर्गावहिनी का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया जाता है। वर्ग में बहनों को दंड, नियुद्ध, छुरिका, लक्ष्यभेद, बाधा जैसे अनेक विधाओं की शिक्षा दी जाती हैं। लव जिहाद, धर्मान्तरण के प्रति जागरूक हों तथा समाज में समरसता का निर्माण हो, इसके लिए अनेक अधिकारी बौद्धिक, चर्चा, कृति सत्र के माध्यम से उन्हें जानकारी देंगे। कार्यक्रम में प्रान्त मंत्री परशुराम जी, कोषाध्यक्ष सजंय जी, मातृशक्ति सह संयोजिका मनु प्रियम, दुर्गावहिनी सह संयोजिका पिंकी कुमारी सहित सैकड़ों बहनें उपस्थित थीं।

chitranjan1964@gmail.com

गौ तस्करी में जप्त वाहन राजसात करने पर प्रशासन का सम्मान

अशोकनगर। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल द्वारा आज प्रशासन का सम्मान किया गया। जिलाधीश महोदय सुभाष कुमार द्विवेदी को माला पट्टी और शील्ड प्रदान की गई साथ में पुलिस अधीक्षक विनीत कुमार जैन, एसडीओपी विवेक शर्मा, तहसीलदार शालनी भार्गव, नायब तहसीलदार मयंक तिवारी, मनीष शर्मा सभी प्रशासन अधिकारी का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर प्रांत धर्मप्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि प्रशासन द्वारा जो समाज में काम किए, गए गो वध के लिए पशु ले जा रहे ट्रकों को राजसात किया गया, अत्याचारियों के अवैध अतिक्रमण के विरूद्ध कार्रवाई की गई इसलिए आज प्रशासन का हम लोग सम्मान कर रहे हैं। प्रशासन द्वारा अच्छा काम किया गया है, उनको हम बहुत–बहुत धन्यवाद देते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं और आगे अपेक्षा करते हैं कि इसी प्रकार अन्याय, अत्याचार के विरोध में आपका सहयोग मिलता रहेगा।

deepakmishravhp@gmail.com

दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग समापन समारोह

पटना, 9 जून। पटना स्थित वीर बसावन नगर के एम एस मेमोरियल एकेडमी में दुर्गा वाहिनी के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग के समापन समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय प्रन्यासी डॉ. आर एन सिंह जी उपस्थित थे। साथ ही मातृशक्ति की क्षेत्र संयोजिका डॉ. शोभा रानी सिंह, विश्व हिंदू परिषद के प्रांत कोषाध्यक्ष संजय कुमार, प्रांत सेवा प्रमुख सुग्रीव प्रसाद, उत्तर बिहार दुर्गावाहिनी प्रांत संयोजिका शिवानी कुमारी, उत्तर बिहार के प्रांत मंत्री राजकिशोर जी मंचासीन थे।

बहनों ने शारीरिक अभ्यास प्रदर्शन करते हुए दंड, नियुद्ध, बाधा, योग व्यायाम, सूर्य नमस्कार, छुरिका, तलवार आदि का प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के उपरांत बहनों का मार्गदर्शन करते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय प्रन्यासी व केंद्रीय सलाहकार पद्मश्री डॉ. आर एन सिंह जी ने कहा कि देश की वर्तमान चुनौतियों में दुर्गावाहिनी की भूमिका बहुत अधिक बढ़ जाती है। आज समाज में लव जिहाद, धर्मांतरण, पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण जैसे कई चुनौती पूर्ण विषय हैं, जिन पर हम सभी को सचेत होकर सामूहिक रूप से काम करना है। बहनों में शौर्य और पराक्रम का भी भाव समय–समय पर भरते रहना चाहिए, ताकि कोई भी विधर्मी हमारी बहनों को लव जिहाद के कुचक्र में ना ले जा सके। दुर्गावाहिनी की बहनें लव जिहाद, धर्मांतरण जैसे विषय के लिए जन जागरण करेंगे। डॉ. सिंह ने आगे कहा कि देश के विरुद्ध चलने वाले नैरेटिव के लिए भी हम सभी, मिलकर ध्यान देना है, ताकि देश विरोधी तत्व पनप ना पाएँ। उसे कड़ी टक्कर दुर्गा वाहिनी के बहनें दें, इसीलिए ही दुर्गा वाहिनी की बहनों को दंड, नियुद्ध, तलवार, छुरिका जैसे विषय के बारे में पूरी शिक्षा दी जाती है। कार्यक्रम का संचालन दुर्गा वाहिनी की सह संयोजिका पिंकी कुमारी ने किया।

दक्षिण बिहार प्रांत का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग तथा परिषद शिक्षा वर्ग

बक्सर। शौर्य प्रशिक्षण वर्ग तथा परिषद शिक्षा वर्ग के कार्यकर्ताओं ने अतिथियों के समक्ष सूर्य नमस्कार, दंड, बाधा, नियुद्ध, एस टी व योग व्यायाम आदि का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। समापन सत्र को संबोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री माननीय मिलिंद परांडे ने कहा कि हिंदुत्व जीवन शैली है और हर हिंदू इसे अपना आदर्श मानता है तथा अपना जीवन उसी अनुसार जीता है। हिंदू समाज का जीवन मूल्य ही उसका आधार है, इसलिए विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता सेवा, सुरक्षा, संस्कार व समरसता आदि के लिए अनेक प्रकार के कार्य करते हैं। आज बजरंग दल के प्रयास से वर्ष भर में लगभग 20000 से भी अधिक युवकों को कौशल विकास के माध्यम से उन्हें रोजगार प्रदान किया है, वैसे ही अपने संगठन के माध्यम से देश भर में 8000 से भी अधिक सेवा के कार्य चल रहे हैं। बजरंग दल के कार्यकर्ता वर्ष भर में लगभग दो लाख से भी अधिक गोवंश कसाईयों के हाथों से बचा रहे हैं। हजारों हिंदू लड़कियों को लव जिहाद के

कुचक्र से मुक्त कर, उन्हें नई जिंदगी देने का काम बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता निरंतर कर रहे हैं। लगभग 80 हजार समितियाँ बनाकर भारत के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों में धर्मो रक्षति रक्षितः के भाव को पुष्ट कर रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डुमरांव महाराज श्री चन्द्रविजय सिंह जी ने कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि इस संगठन से जुड़कर देश की रक्षा और धर्म की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने की प्रेरणा हम सबको मिल रही है। कार्यक्रम का संचालन रविन्द्र राणा जी ने किया।

chitranjan1964@gmail.com

कायरों के हमलों से हिंदू समाज डरने वाला नहीं है : रविदेव आनंद

जम्मू कश्मीर में तीर्थयात्रियों की बस पर हुए हमले की कड़ी निंदा

हरिद्वार, 12 जून। विश्व हिंदू परिषद के प्रांत अध्यक्ष रविदेव आनंद ने जम्मू संभाग के रियासी क्षेत्र में वैष्णादेवी से शिवखोड़ी धाम के दर्शन करने जा रहे तीर्थयात्रियों की बस पर हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करते हुए सरकार से सख्त कार्रवाई की मांग की है। प्रेस क्लब में पत्रकार वार्ता के दौरान विहिप प्रांत अध्यक्ष रविदेव आनंद ने कहा कि इस तरह के कायराने हमलों से हिंदू समाज डरने वाला नहीं है। बजरंग दल द्वारा निकाली जाने वाली बूढ़ा अमरनाथ यात्रा और अमरनाथ यात्रा पूरे जोश से चलेगी। उन्होंने कहा कि रियासी क्षेत्र में श्रद्धालुओं की बस पर हुए हमले के अलावा दो अन्य आतंकवादी घटनाएँ भी हाल ही में घटी हैं। सरकार को पाक प्रायोजित आतंकवाद पर लगाम लगाने के लिए कठोर से कठोर कार्रवाई करनी चाहिए और आतंकवादी नेटवर्क को ध्वस्त करना चाहिए।

बजरंग दल के प्रांत संयोजक अनुज वालिया ने कहा कि हिंदुओं की धार्मिक यात्रा पर हमला चिंताजनक है। सरकार को पाक को कड़ा जवाब देना चाहिए। वैष्णो देवी जा रहे श्रद्धालुओं की बस पर हमला बजरंग दल की बूढ़ा अमरनाथ यात्रा को प्रभावित करने का प्रयास है, लेकिन इससे यात्रा कतई प्रभावित नहीं होगी और तय समय पर ही होगी। उन्होंने बताया कि अगस्त में होने वाली बूढ़ा अमरनाथ यात्रा में पूरे देश से करीब 1 लाख बजरंग दल कार्यकर्ता शामिल होंगे। जिसमें उत्तराखंड से पाँच सौ कार्यकर्ता शामिल होंगे। विहिप प्रचार प्रसार विभाग के प्रांत प्रमुख पंकज चौहान ने कहा कि जम्मू कश्मीर लंबे समय से पाकिस्तान पोषित आतंकवाद की चुनौती का सामना कर रहा है। हिंदू श्रद्धालुओं पर आतंकवादियों का कायरना हमला देश की संप्रभुता को चुनौती है, जिसका पूरी ताकत से मुकाबला किया जाएगा। आतंकवादी गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए सरकार को निर्णायक और कठोर कदम उठाते हुए आतंकवाद को प्रश्रय देने वाली ताकतों का सिर भी कुचलना चाहिए। प्रेसवार्ता के उपरांत सिटी मजिस्ट्रेट के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भी प्रेषित किया गया।

गौतस्करी रोकने और मनरेगा की २२०० बंद पड़ी गौशालाओं को शीघ्र चालू करने हेतु विहिप-गौरक्षा विभाग ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

गंज बासौदा। विगत 10 जून को विश्व हिन्दू परिषद् गोरक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के मुख्यमंत्री महोदय के नाम अनुविभागीय अधिकारी बासोदा को 19 सूत्रीय ज्ञापन पत्र सौंपा गया, जिसमें गोरक्षा संकल्प के सरकार की नीति की मंशा के विपरित गोवंश तस्करी तेज गति से बढ़ी और गो तस्कर निडर होकर बड़ी संख्या में गोवंश तस्करी कर रहे हैं। ज्ञात हो कि पिपल्या मण्डी में 47 ट्रक गोवंश बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने पुलिस के सहयोग से जब्त किया है। सम्पूर्ण मध्यप्रदेश से गोवंश की तस्करी कर गोवंश को महाराष्ट्र, बंगाल ले जा रहे थे। किसानों के नाम से मांस व्यापारी गाडोल्या लोहार, भोलेभाले आदिवासीयों को चंद रूपये देकर तस्करी कराते हैं। अभी तक का गोवंश कभी भी दक्षिण से उत्तर की ओर नहीं गया। बैल किसानों के लिए हैं न कि माँस मण्डी के लिए। देवास, उमरिया, रूणीजा, मंहू में जब्त गोमाँस से यह सिद्ध होता है कि मध्यप्रदेश में लोकल स्लाउटर हाऊस में गोवंश का वध कर लोकल मांस की दुकानों पर बेचा जा रहा है। मध्यप्रदेश गोवंश वध प्रतिशेध अधिनियम की अवहेलना कर तस्कर सक्रिय हैं और पुलिस अनदेखी कर रही है। मध्यप्रदेश गोवंश वध प्रतिशेध अधिनियम का सख्ती से पालन हो। मध्यप्रदेश में 350 लगभग पशु मेला एवं हाट बाजार के माध्यम से यह सब तस्करी होती है। ऐसे पशु बाजार एवं मेले पर प्रतिबंध लगा कर नियम विरुद्ध भरा गया हो, तो मेला समिति पर भी मध्यप्रदेश गोवंश प्रतिशेध अधिनियम के तहत कार्यवाही की जाए। विहिप गोरक्षा विभाग निम्न प्रतिबंध की मांग करता है–

- पशु मेले की आड़ में निराश्रित गौवंश की बिक्री बंद हो।
- गोवंश तस्करी बंद हो।
- यदि मेले की चिट्ठी पर गोवंश नियम विरूद्ध भरा हो, तो मेला समिति पर गोवंश वध प्रतिशेध अधिनियम के तहत कार्यवाही की जाए।
- आबकारी के नियम जैसे नियम विरूद्ध गोवंश परिवहन पर वाहन राजसात अनिवार्य करें।
- जिस थाना क्षेत्र से तस्करी होती है, तो थाना प्रभारी को निलंबित किया जाये।
- एक से अधिक बार वाहन/गोतस्करी करते पकड़े जाने पर रासुका के तहत कार्यवाई की जाये।
- 1962 संजीवनी पशु एम्बुलेंस को गोवंश के लिए 150 रू. शुल्क से मुक्त रखा जाये।
- खेत की मेड़ पर लगने वाली झटका मशीन पर प्रतिबंध लगाया जाये।
- गोतस्करी रोकने में बलिदान/अंगविहीन होने पर गोभक्तों को गोसेवक सम्मान दिया जाए, परिवार के एक सदस्य को शासकीय नौकरी दी जाये।
- गोशालाओं को भूमि आबंटन प्रक्रिया सरल कर तुरन्त भूमि आबंटित की जाये।
- गोशालाओं को 5 हार्स पॉवर का विद्युत कनेक्शन मुफ्त दिया जाये, जन भागीदारी से गोशालाओं में निर्माण कार्य की अनुमति हो।
- स्वयंसेवी संस्थाओं को मनरेगा से मजदूर (सेवक) दिया जाये।
- गोचर भूमि अतिक्रमण से मुक्त की जाये।
- गोशालाओं द्वारा निर्मित वर्मी कम्पोस्ट, कीट नियंत्रक को फर्टीलाजर्स एक्ट से बाहर किया जाये।
- गोशालाओं द्वारा निर्मित वर्मी कम्पोस्ट, कीट नियंत्रक को शासन खरीद कर सहकारी संस्थाओं के माध्यम से बिक्री की जावे।
- गोउत्पाद को टैक्स मुक्त किया जाये।
- पशु जाँच चौकियाँ स्थापित की जाएँ।
- गो समाधि स्थल का चयन कर भूमि सुरक्षित की जाये।
- प्रदेश में नवनिर्मित मनरेगा गोशालाओं को पूर्ण कर गोवंश रखा जाए, ताकि बारिश में गोवंश सुरक्षित रह सके।

ज्ञापन सौंपने वालों में विहिप, बजरंग दल, दयोदय गौशाला, सर्वदलीय गौरक्षा मंच, वंदे मातरम् सेवा समिति, निःस्वार्थ गौ चिकित्सा समिति सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

sharmabhishek.guruji99@gmail.com

हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ सामुदायिक भागीदारी को अपनाने के लिए तैयार है

रोटोरुआ में हिंदू हेरिटेज सेंटर गर्व से अपने दरवाजे खोलने की तैयारी की घोषणा करता है। व्यापक समुदाय, सॉंस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने के अपने मिशन में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर चिह्नित करता है। 225 मालफ्रॉय रोड, रोटोरुआ पर स्थित, हिंदू हेरिटेज सेंटर एक सॉंस्कृतिक समृद्धि और समावेशिता के प्रतीक रूप में खड़ा है, महीनों की योजना और तैयारी के बाद। व्यक्तियों, परिवारों और सामुदायिक संगठनों को हार्दिक निमंत्रण देते हुए खुशी हो रही है। अपनी नियमित गतिविधियों के लिए हमारी सुविधाओं का उपयोग करें। हमारी साप्ताहिक हिंदी कक्षाएँ प्रत्येक शनिवार को अपराह्न 3 से 4 बजे तक चलती हैं। ये वर्ग हिंदी सीखने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए डिजाइन किया गया है। हमारा हॉल अब ध्यान के लिए उपलब्ध है। प्रत्येक गुरुवार शाम को सत्र, समुदाय के सभी सदस्यों का स्वागत है। आगे देखते हुए हम जल्द ही संगीत और नृत्य कक्षाएँ शुरू करने के लिए अनुभवी प्रशिक्षकों के साथ बातचीत कर रहे हैं।

इसके अलावा हम सक्रिय रूप से हिंदू बुजुर्गों, हिंदूओं के लिए नियमित सभाओं सामुदायिक संबंध और जुड़ाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महिलाओं और हिंदू युवाओं की योजना बना रहे हैं। हो सकता है कि वे एक सामुदायिक उद्यान स्थापित कर रहे हों। हिंदू हेरिटेज सेंटर हिंदू विरासत के संरक्षण, प्रचार और उत्सव के लिए समर्पित है। समुदाय के भीतर सांस्कृतिक संवर्धन और आध्यात्मिक पोषण को बढ़ावा देना। इसे पाने के लिये, केंद्र ने रंगोली (एक प्राचीन भारतीय कला रूप) और मेहंदी में नियमित कक्षाएँ आयोजित करने की योजना बनाई है। (मेंहदी से बने पेस्ट का उपयोग करके अस्थायी त्वचा की सजावट), योग सत्र, पाठ, हनुमान चालीसा, पारंपरिक संगीत और नृत्य कक्षाएँ, और हिंदू धर्मग्रंथ कक्षाएँ, आयोजन हिंदू की समझ को गहरा करने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और सेमिनार, परंपराएँ और प्रथाएँ, त्योहार मनाएँ, कार्यक्रम आयोजित करें, संगीत और नृत्य का प्रदर्शन करें। प्रदर्शन और क्यूरेट प्रदर्शनियाँ जो हिंदू सॅंस्कृति की समृद्धि को उजागर करती हैं, के माध्यम से इन प्रयासों में हमारा लक्ष्य रोटोरुआ के जीवंत समुदाय को सक्रिय रूप से शामिल और समृद्ध करना है।

सॉंस्कृतिक आदान–प्रदान के अलावा, केंद्र सामुदायिक कार्यक्रमों, बैठकों के लिए एक स्थल के रूप में भी काम करेगा। रोटोरुआ बहुसॉंस्कृतिक परिषद और उसके सदस्य के साथ सहयोग करेगा। संगठनों पर चर्चा हो रही है। हाल ही में रोटोरुआ के अध्यक्ष डॉ. मार्गरीट थेरॉन, बहुसॉंस्कृतिक परिषद, अपनी टीम के सदस्यों लेडी मोनसाल्वेस (प्रशासक) और युमिको के साथ कवानो (कार्यकारी अधिकारी) ने केंद्र का दौरा किया। हिंदू हेरिटेज सेंटर का उद्घाटन हमारे प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम है। समुदाय के भीतर एकता और सहयोग की भावना पैदा करना, प्रोफेसर गुना ने टिप्पणी की। मगेसन, न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद के अध्यक्ष हैं। हम स्वागत के लिए उत्साहित हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों के व्यक्ति हिंदू संस्कृति और विरासत की सुंदरता का अनुभव करेंगे।

हिंदू हेरिटेज सेंटर स्वयंसेवा, दान और सक्रियता के माध्यम से जनता का समर्थन चाहता है। हमारी समृद्ध सॉंस्कृतिक विरासत के निरंतर संरक्षण और संवर्धन को सुनिश्चित करने के लिए भागीदारी है। मीडिया के सदस्यों को हमारे उद्घाटन की खबर व्यापक लोगों के साथ साझा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। आइए, हम साथ मिलकर आपसी सम्मान, समझ की यात्रा शुरू करें। हमारी विविध सॉंस्कृतिक विरासत की सराहना करें।

hindu.nz@gmail.com

साकोली, भंडारा में मातृशक्ति के निवासी वर्ग को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

बनखेडी, नर्मदापुर में मध्यभारत प्रांत के परिषद शिक्षा वर्ग को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

हिन्दू श्रद्धालुओं पर इस्लामिक जेहादी आतंकवादियों द्वारा
किए गए हमले के विरोध में अशोकनगर, आगरा एवं हरिद्वार में विहिप का प्रदर्शन

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.06.2024
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

सासवड पश्चिम महाराष्ट्र में आयोजित दुर्गावाहिनी के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

नागदा में मालवा प्रांत दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित पू. साध्वी हेमलता दीदी सरकार, सरोज सोनी राष्ट्रीय सह संयोजिका मातृशक्ति, श्रीमती पिंकी पंवार राष्ट्रीय सह संयोजिका दुर्गावाहिनी, प्रांत मंत्री एवं दुर्गावाहिनी-मातृशक्ति पालक विनोद जी शर्मा

पटना में आयोजित दुर्गावाहिनी का प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

बक्सर में आयोजित बजरंग दल के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में प्रशिक्षण लेते बजरंगी

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी-82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस-1, नई दिल्ली-110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी